आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

सहयोग राशि
30/- ₹

अप्रैल 2023

क्रान्ति

मासिक

स्कूली शिक्षा

नवाचारों के साथ नैतिक आदर्शों को क़ायम रखने की चुनौती

ISO 9001:2008

YOUR LIFE PAVING COMPANY

Hindustan Group
Established Since 1977
Hindustan
Pavers & Blocks

The offered high quality range of Interlock Pavers adds grace to the looks of interiors and exteriors of residential as well as commercial buildings.

Owing to their features like magnificent appearance, excellent finish, impact resistance and accurate cutting, these pavers are highly demanded in the market.

These pavers are processed by our experts using high grade raw materials in conformity with the international parameters.

Product Range

- **SLOT BLAST SERIES**
- **STANDARD** *(PLAIN METAL PRESS SMOOTH FINISH)*
- **RUBBER MOULD SERIES**
- **TILES**
- **CEMENT BLOCKS**
- **OTHER CEMENT PRODUCT**

Manufacturers of Solid Concrete Block, Interlocking Pavers, Concrete (AAC) Blocks, Tiles, Designer Concrete Benches & Allied Concrete Products.

Opp. Colvale Jail, Karaswada,
Mapusa, Goa

+91 982 242 77 00, 772 099 77 00
+91 880 504 77 00, 880 503 77 00

www.hindustangroupgoa.com

hindustansales@gmail.com
hindustanindustries@gmail.com

DIRECTORS

MEHMOOD KHAN **ANWAR KHAN** **AKBAR KHAN**

Website Link :
www.kantimasik.com

संपादक
शिब्ली अरसलान
editorkantimasik@gmail.com

प्रबंधक
नईम ख़ान
+91 9891160829

सहयोग राशि
एक प्रति 30/- रु॰ एक वर्ष 350/- रु॰
दो वर्ष 670/- रु॰ तीन वर्ष 950/- रु॰
चार वर्ष 1200/- रु॰ पांच वर्ष 1400/- रु॰
आजीवन रु॰ 4000/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों के लिए 110/- रियाल
यूरोप व अमेरिका के लिए 40/- US डॉलर

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए सम्पर्क करें :

कार्यालय :
कान्ति मासिक, डी-314, दावत नगर,
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-110025

हेल्पलाइन न॰
+91 8920589292

Account Detail
NAME : KANTI
A/C NO : 0990839195
IFS CODE : IDIB000J029
TYPE : CURRENT
BANK : INDIAN BANK
BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA
NEW DELHI - 110025

चेक / ड्राफ्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), डी-314 दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली - 110006 से मुद्रित।
फ़ोन: 9818799223
संपादक: शिब्ली अरसलान

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

वर्ष 32 अंक 10 अप्रैल 2023

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब



कान्ति
मासिक

इस अंक में

मूल प्रश्न 04
बौद्धिक विश्लेषण और सोशल एंगेजमेंट की ज़रूरत
शिब्ली अरसलान

चिंतन 07
सौहार्द के सूत्रधार
डॉ॰ अब्दुल अहद अंसारी

सौंदर्य बोध 11
पहचानें! झूठ के रंग
ज़ईमुद्दीन अहमद

मुख्य स्तंभ 15
नवाचारों के साथ नैतिक आदर्शों को क़ायम रखने की चुनौती
सुफ़ियान अहमद

अभिमत 19
सीखने के संकट से जूझती स्कूली शिक्षा
डॉ॰ रुक्मिणी बनर्जी

समाधान 23
क्या हो स्कूली शिक्षा का लक्ष्य?
डॉ॰ प्रदीप कुमार

कविता 25
जन के लिए जियो
पूरन चंद्र जोशी

मंथन 26
कितने विवश, कितने सजग?
जितेंद्र गौतम

दृष्टिकोण 29
गौरक्षा और मांसाहार
अहसन फ़िरोज़ाबादी

विशेष-आयोजन 33
सम्पूर्ण समर्पण का प्रशिक्षण शिविर
मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी

महिला जगत 37
नारीत्व की स्वीकृति
रहमतुन्निसा

कहानी 42
दो गज़ ज़मीन
राजेंद्र जोशी

सेहत 45
बच्चों को बचाएं
संपादन प्रभाग

करियर 47
प्रिंटिंग और पैकेजिंग: करियर का बेहतर विकल्प
संपादन प्रभाग

आख़िरी पन्ना 49
व्यक्तिगत व्यवहार की पद्धति
डॉ॰ फ़रहत हुसैन

मूल प्रश्न



शिब्ली अरसलान

युवाओं में व्याप्त आक्रोश और नकारात्मकता

बौद्धिक विश्लेषण और सोशल एंगेजमेंट की ज़रूरत

उत्तर भारत की हिन्दी-उर्दू पट्टी के हिंदू-मुसलमानों विशेष तौर पर इनके युवाओं में इतनी निगेटिविटी और आक्रोश है कि समझ में नहीं आता कि क्या किया जाए? पिछले महीने मेवात में एक बड़ी लोमहर्षक घटना घटित हुई जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अब तक चर्चा का विषय बनी हुई है। 'गो-रक्षा' के नाम पर जुनैद व नासिर को कार की सीट बेल्ट से बांध कर जिस तरह ज़िंदा जला दिया गया, ये मानवता को तार-तार करने वाला अत्यंत वहशी और दुर्लभतम कुकृत्य है।



गो-तस्करी और कथित गो-हत्या के विरुद्ध हिंदूवादी संगठनों से जुड़े युवाओं का एक कथित गैंग हरियाणा और एनसीआर एरिया में इतना आक्रोशित है कि उसे अब आदमख़ोरी से भी परहेज़ नहीं। यही नहीं, इस गैंग के समर्थन में दिल्ली से क़रीब हरियाणा के कई इलाक़ों में जो 'हिंदू पंचायतें' होने लगी हैं, और उसमें युवा शक्ति जिस नेगेटिविटी और आक्रोश का इज़हार करती है या फिर सोशल मीडिया पर ये आक्रोश जिस ख़तरनाक तरीक़े से सामने आ रहा है, फिर उस आक्रोश पर मुस्लिम युवाओं की प्रतिक्रियाएं जिस 'शब्द-वीरता' के साथ सामने आती हैं, ये बेहद चिंता का विषय है।

युवाओं के अंदर पाए जाने वाले आक्रोश का बौद्धिक विश्लेषण और उनका सही दिशा-निर्देशन तथा उनसे engage होना आज की बड़ी ज़रूरत है। फेसबुक और ट्विटर जैसे माध्यम से ये आक्रोश, निगेटिविटी और हताशा बिल्कुल नंगे तौर पर सामने आ रहे हैं। कोइ ब्रेक और लगाम नहीं। कोई बात या घटना कहीं से सुनी या पढ़ी, थोड़े भावुक हुए और फ़ौरन अपना घायल एहसास दे मारा फेसबुक और ट्विटर पर। किसी सत्यापन, बड़ों व जानने वालों से विचार-विमर्श और विश्लेषण की कोई ज़रूरत नहीं। दोनों तरफ़ के 'सांप्रदायिक ब्रिगेड' ने कच्चे और अपरिपक्व ज़ेहनों को 'बेख़ौफ़' बनाने के नाम पर जो माहौल पैदा किया है, इससे बड़ा ख़ौफ़ महसूस हो रहा है।

ये भी सच है कि कोई विश्लेषण तभी फ़ायदामंद होगा जब

युवा वर्ग किसी विश्लेषण को खुले दिमाग़ व दिल से सुनने के लिए तैयार हो। सुनने का मतलब ये नहीं है कि 'हां साहब, सुन लिया', बल्कि कही गई बातों और नुक़्तों पर सवाल-जवाब और बातचीत हो, सहमति के बिन्दु पर अपनी राय बदलने का हौसला हो। अफ़सोस, निगेटिविटी का ज़हर युवाओं के एक तबक़े में इस क़दर सरायत किया हुआ है कि वो कुछ सुनने और हेल्दी डिबेट के लिए तैयार नहीं होते, सीधे गाली और गोली की बात आ जाती है! हां, ऐसे युवा भी मौजूद हैं जो बातों को सुनते भी हैं, तर्क व संवाद की क़ुव्वत भी रखते हैं और मुनासिब राय को खुले मन से क़ुबूल भी करते हैं। इनसे ज़रूर मुकालमा होना चाहिए। मेरे पेशे-नज़र यही युवा बिरादरी है।

युवाओं में व्याप्त निगेटिविटी और आक्रोश के तीन प्रकार हैं। एक प्रकार का आक्रोश तो वो है जिसका लाभ कम्युनिटी पॉलिटिक्स करने वाले ले उड़ते हैं या वो आक्रोश, जिसे राजनीतिक ख़ेमा पैदा कर रहा है और हवा दे रहा है। मैं 'कम्युनिटी पॉलिटिक्स' का मुख़ालिफ़ नहीं हूं मगर ये याद रहे कि कम्युनिटी पालिटिक्स और कम्युनल पालिटिक्स के बीच बहुत बारीक लकीर है। अपने समुदाय की हमदर्दी में आंसू बहाते हुए अक्सर वो बारीक लकीर (LOC) क्रॉस हो जाती है जिससे निगेटिविटी फैलती है और हिंदू व मुसलमानों की बदरंग तस्वीर सामने आती है, फिर नफ़रत की सियासत करने वाले अपनी दुकान जमाने में कामयाब होते हैं, जिसके लिए बैनर, साइन बोर्ड हम फ़राहम करते हैं। स्पष्ट रहे कि इस आक्रोश का मज़हबी ख़ेमा से कोई संबंध नहीं है, इसमें कुछ मज़हबी भोले-भाले लोग भी हैं जो 'सामुदायिक हमदर्दी' में साथ आ गए हैं, वरना ज़्यादातर मज़हब से दूर, मज़हबी जमाअतों से दूर आधुनिक नज़र आने वाले यूवा हैं। इनके दिमाग़ में ये बैठाया गया है कि 'हिंदू ख़तरे में हैं और मुसलमानों की कथित जनसंख्या वृद्धि दर सब से बड़ा मसला है' या 'मुसलमान आज़ादी के बाद से लगातार पिछड़ रहे हैं और ठगे जा रहे हैं, ये सबसे मज़लूम समुदाय है, हमें अपना हक़ लेना है और पिछड़ेपन से निकलना है'।

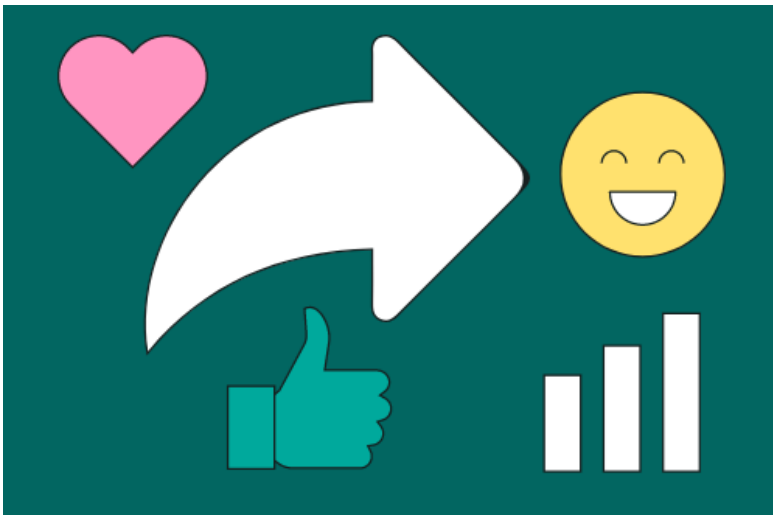
बात यहीं तक नहीं रहती, खूंटा कहीं और गाड़ने की कोशिश शुरू हो जाती है। अपने हक़ के लिए और पिछड़ेपन से निजात के लिए जैसी लोकतांत्रिक कोशिश या आज की भाषा में लड़ाई होनी चाहिए, उसकी तो कोई नीति और नियति ही नज़र नहीं आती, ग़ैर-ज़रूरी शोर-शराबा और 'हम किसी से कम नहीं' का एक तूफ़ान-ए-बदतमीज़ी ज़्यादा दिखता है। 'गले पर छुरी रख दो, भारत माता की जय नहीं बोलेंगे' या 'लव जिहाद और घर वापसी' जैसी ढेरों निराधार और बुद्धीहीन बातें छेड़ दी जाती हैं। और इसके समर्थन और विरोध में पढ़े लिखे लड़के अपना ख़ून खौलाते रहते हैं। ट्विटर ट्रेंड और फेसबुक वार के ज़रिये ये समझते हैं कि हम अपने हिस्से और हक़ के लिए लड़ रहे हैं, और ये भी कि 'हिन्दू हृदय सम्राट' की तरह 'मुस्लिम हृदय सम्राट' भी होना चाहिए।

कुरआन का संबोधन पूरी इंसानियत से है, कुरआनी दर्शन में 'क़ौम' शब्द हमवतनों के लिए प्रयोग हुआ है, पैग़म्बरों और नबियों ने उन्हें फॉलो नहीं करने वाले हम-वतनों को भी प्यार से 'या क़ौमी' यानी 'ऐ! मेरी क़ौम' कहा। फिर कुरआन सांस्कृतिक एवं समुदायिक बहुलता को ख़ुदाई स्कीम कहता है। कुरआन की सूरह न.-16 और आयत न.-93 में ये स्पष्ट किया गया है कि ये बहुलता ख़ुदा की स्कीम है। इसलिए मुसलमानों को स्पष्ट हिदायत की गई है कि वे पूरी मानवता का दर्द रखें और सब के लिए काम करें।

दूसरे प्रकार की नकारात्मकता और आक्रोश फैलाने वाले मज़हबी कट्टरपंथी हैं, जो मज़हबी जज़्बात को भड़का कर आक्रोश पैदा करते हैं, इनसे लम्बे संवाद की ज़रूरत है। इनका बुनियादी मसला ये है कि मज़हब और कल्चर को लेकर इनकी समझ और अवधारणा में बड़ी उलझन और झोल है। मुश्किल ये भी है कि ये कुछ सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। खुले विमर्श और तर्क-वितर्क को ये मज़हब के ख़िलाफ़ समझते हैं मगर स्वयं कुतर्क से नहीं चूकते। इनकी कितनी ही बातों से अलगाववाद झलकने लगता है। समाज में रहने वाली दूसरी कम्युनिटीज़ पर इनका ज़ेहन साफ़ नहीं है। इसे हम धार्मिक अतिवाद कह सकते हैं।

हिंदू समुदाय के धार्मिक अतिवाद पर किसी दूसरे अवसर पर बात होगी, मगर जहां तक मुस्लिम मज़हबी अतिवाद की बात है तो बुनियादी बात ये है कि इनकी धार्मिक अवधारणा में क़ुरआनी दर्शन को केंद्रीय स्थान हासिल नहीं है हालांकि क़ुरआन, इस्लाम का असल सोर्स है, इस्लाम से जोड़ी जाने वाली हर चीज़ क़ुरआन की कसौटी पर परखी जाएगी, तभी क़ुबूल की जा सकती है, इसलिए क़ुरआन ने ख़ुद को 'मीज़ान' अर्थात तराज़ू कहा है। किसी मसले और मुद्दे पर क़ुरआनी दर्शन के बजाए केवल समुदायिक हित को सर्वोपरी रखने की ज़िद्द, वास्तव में इस्लाम के विरुद्ध है।

क़ुरआनी दर्शन के केन्द्र में एक रचियता व एक मालिक की अवधारणा से निकली मानवता (unity of mankind) सबसे अहम है। क़ुरआन का संबोधन पूरी इंसानियत से है, क़ुरआनी दर्शन में 'क़ौम' शब्द हम-वतनों के लिए प्रयोग हुआ है, पैग़म्बरों और नबियों ने उन्हें फॉलो नहीं करने वाले हम-वतनों को भी प्यार से 'या क़ौमी' यानी 'ऐ! मेरी क़ौम' कहा। फिर क़ुरआन सांस्कृतिक एवं समुदायिक बहुलता को ख़ुदाई स्कीम कहता है। क़ुरआन की सूरह न.-16 और आयत न.-93 में ये स्पष्ट



किया गया है कि ये बहुलता ख़ुदा की स्कीम है। इसलिए मुसलमानों को स्पष्ट हिदायत की गई है कि वे पूरी मानवता का दर्द रखें और सब के लिए काम करें। कहा गया '... तुम नास (mankind) के लिए निकाले गए हो।' इतनी स्पष्टता के बाद अलगाववाद और सांप्रदायिक कट्टरता के लिए कहां जगह बचती है? मगर मज़हबी कट्टर लोग क़ुरआन को छोड़ कर जहां-तहां से या फिर क़ुरआनी दर्शन को संपूर्णता में समझने के बजाए क़ुरआन को मिसकोट करते हैं।

तीसरे प्रकार का आक्रोश ज़्यादा संगीन नहीं हैं। ये आक्रोश, उन दोनों से अलग, बौद्धिकता के लिहाज़ से औसत से कम ज़ेहन युवाओं में पनप रहा है। ये स्थितियों के विस्तृत विश्लेषण की कमी का नतीजा है, सोशल मीडिया ने लिखने और अपने विचार रखने का बड़ा गोल्डेन चांस दिया है, जल्द से जल्द अपनी प्रतिक्रिया देने के चक्कर में ऐसा हो रहा है, ये वाली निगेटिविटी युवाओं को सामाजिक तौर पर सक्रिय रखने से काफी कम हो जाती है। ■■

तीसरे प्रकार का आक्रोश ज़्यादा संगीन नहीं हैं। ये आक्रोश, उन दोनों से अलग, बौद्धिकता के लिहाज़ से औसत से कम ज़ेहन युवाओं में पनप रहा है। ये स्थितियों के विस्तृत विश्लेषण की कमी का नतीजा है, सोशल मीडिया ने लिखने और अपने विचार रखने का बड़ा गोल्डेन चांस दिया है, जल्द से जल्द अपनी प्रतिक्रिया देने के चक्कर में ऐसा हो रहा है, ये वाली निगेटिविटी युवाओं को सामाजिक तौर पर सक्रिय रखने से काफी कम हो जाती है।

सौहार्द के सूत्रधार



चिंतन



डॉ. अब्दुल अहद अंसारी

बहुत से लोग जातियों और भाषाओं की तरह धर्मों की बहुतायत को भी एकता एवं सौहार्द के मार्ग में रुकावट समझने लगे हैं। कुछ लोग इस संकट का हल सर्वधर्म एकम् की धारणा में तलाश करते हैं, लेकिन यह नहीं जानते कि सर्वधर्म एकम् का दृष्टिकोण किसी धर्म का बदल नहीं बन सकता। जिस प्रकार अधिक भाषाओं का हल वह नहीं है कि हम उनके बीच एक ''उभयनिष्ठ भाषा'' तलाश करें या विभिन्न भाषाओं से कुछ अंश लेकर एक मिश्रित भाषा बनाएं। इसी प्रकार धर्मों के अधिक होने का हल यह नहीं है कि हम उनमें से एक ''उभयनिष्ठ धर्म'' निकालने का प्रयास करें या हर धर्म से एक-एक अंश लेकर एक नया "ईश्वरीय धर्म" (दीन-ए-इलाही) तैयार करें।

कुछ उन्नतिशील वर्ग धर्मों की अधिकता से आगे बढ़कर धर्म की आत्मा को ही मतभेद एवं फूट का कारण बताते हैं। उनकी दृष्टि में ईश्वर का नाम लेना ही फूट और उपद्रव को आमंत्रित करना है। उन लोगों की कोई रुचि धार्मिक झगड़ों को सुलझाने में नहीं है। ये अपना काम प्रत्येक धर्म को जड़-बुनियाद से उखाड़ना समझते हैं। अतः उनके बहुत-से लोग और जत्थे धार्मिक झगड़ों को हवा देते हैं और साम्प्रादियक उपद्रवों में सक्रिय नज़र आते हैं ताकि वे इस प्रकार धर्म को बदनाम कर सकें और धार्मिक शक्तियों को कमज़ोर कर सकें। यह समुदाय भारत को उसकी हज़ारों साल की प्राचीन धार्मिक परम्पराओं से काटकर अधार्मिकता के पथ पर चलाना चाहता है। उसे यह एहसास नहीं है कि धर्म की जड़ें मानव-प्रकृति की गहराइयों में इस प्रकार पेवस्त है कि किसी के उखाड़ने से उखड़ने वाली नहीं है।

न धर्म ही सौहार्द और एकता के मार्ग में रुकावट है और न धर्म की बहुतायत। जो चीज़ वास्तव में रुकावट है, वह अधार्मिकता और धर्म के दुश्मनों के वे प्रयास जो धर्म के नाम पर बड़ी

निर्लज्जता के साथ आजकल किए जा रहे हैं। धर्म के नाम पर जो झगड़े होते हैं उनके पीछे कोई धार्मिक भावना क्रियाशील नहीं होती, बल्कि कुछ तुच्छ, वैयक्तिक और सामुदायिक उद्देश्य और कुछ विशुद्ध भौतिक और राजनीतिक लाभ-प्राप्त करने होते हैं। झगड़ों का आरंभ प्रायः किसी साधारण घटना से होता है, जिसे यदि लोग अपने-अपने धर्म की वास्तविक शिक्षाओं के प्रकाश में सुलझाना चाहें तो वे छोटी-छोटी एवं साधारण घटनाएं बढ़कर उपद्रव का रूप न अपनाने पाए। उन चिंगारियों को जो चीज़ शोला बना देती है और जिसकी आग बहुत-सी मानव-बस्तियों और बहुमूल्य इन्सानी जानों को अपनी लपेट में ले लेती है, वह अधार्मिकता और धार्मिक शत्रुता की वह योजनाबद्ध कोशिशें हैं जो धर्म की आड़ में की जाती हैं और जिनका एक मात्र उत्प्रेरक धन और सत्ता से संबन्धित स्वार्थ होता है। ये कोशिशें कदापि किसी धर्म के सम्मान का कारण नहीं, बल्कि अपमान का कारण होती हैं।

भारत में धार्मिक टकराव के कुछ कारणों में पहला और मौलिक कारण यह है कि हममें से कुछ लोग और कुछ जत्थे यह मानने के लिए तैयार नहीं है कि भारत केवल एक धर्म के मानने वालों का नहीं, बल्कि उन सारे धर्म वालों का देश है जो यहां पर सैकड़ों और हज़ारों साल से रहते और बसते चले आए हैं। ये लोग इस देश को अपनी व्यक्तिगत मीरास समझते हैं और दूसरों को विदेशी कहते हैं। उन्होंने भारतीय होने की जो शर्तें रखी हैं, उनका सार यह है कि जब तक दूसरे लोग उनकी धार्मिक परम्पराओं को अपनी परम्परा और उनकी धार्मिक विभूतियों को अपनी विभूतियां न स्वीकार कर लें अर्थात् अन्य शब्दों में– जब तक उनके धर्म के एक-एक अंश का ईमान न लाएं उस समय तक "भारतीय" कहलाने के पात्र नहीं हैं। उनके विचार में भारतीय होने के लिए इस देश के साथ वफ़ादारी और प्रेम काफ़ी नहीं है। स्पष्ट है कि इस मानसिकता की मौजूदगी में देश में कभी अम्न एवं शांति का वातावरण स्थापित नहीं हो सकता।



भारत में धार्मिक टकराव के कुछ कारणों में पहला और मौलिक कारण यह है कि हममें से कुछ लोग और कुछ जत्थे यह मानने के लिए तैयार नहीं है कि भारत केवल एक धर्म के मानने वालों का नहीं, बल्कि उन सारे धर्म वालों का देश है जो यहां पर सैकड़ों और हज़ारों साल से रहते और बसते चले आए हैं। ये लोग इस देश को अपनी व्यक्तिगत मीरास समझते हैं और दूसरों को विदेशी कहते हैं।

दूसरा कारण यह है कि कुछ लोग ग़लती से यह सोचने लगे हैं कि उनका अपने धर्म को सच्चा समझना, अपने रीति-रिवाजों एवं नियमों को प्रतिष्ठित समझना और अपनी परम्पराओं और बुज़ुर्गों का सम्मान करना इस बात की अपेक्षा करता है कि वे अपने धर्म को दूसरों पर लाद दें और अपनी पद्धतियों को दूसरों से बलपूर्वक मनवाएं और यह यदि संभव न हो तो उनकी धारणाओं पर फ़ब्ती कसें और व्यंग करें। उनके उपासनागृहों का अनादर करें और उनकी बुज़ुर्ग हस्तियों का मज़ाक़ उड़ाएं। यद्यपि इन दोनों बातों में कोई जोड़ नहीं है। मैं यदि किसी धारणा को सही और दूसरे को ग़लत समझता हूं तो इससे मुझे कब यह अधिकार प्राप्त होता है कि मैं दूसरे की धारणा व धर्म का मज़ाक़ उड़ाऊं। यदि मैं अपने रीति-रिवाजों को बेहतर और दूसरे रीति-रिवाजों को अच्छा नहीं समझता हूं तो इससे कब यह औचित्य बनता है कि मैं अपने तरीक़े को दूसरों पर ज़बरदस्ती थोपूं। जो भी व्यक्ति या समूह ऐसा करेगा वह मानवता और लोकतंत्र का ही नहीं, स्वयं अपने धार्मिक मूल्यों का गला घोंटेगा।

तीसरा कारण यह है कि हममें से प्रायः अपने लिए जो अधिकार चाहते हैं वे अधिकार दूसरों को देने के लिए तैयार

नहीं होते। उदाहरणतः हम यह चाहते हैं कि हमारी जान व माल सुरक्षित हो, हमारी मान-मर्यादा को आंच न आए, हमें शिक्षा एवं उन्नति के पूरे अवसर प्राप्त हों, पदों और नौकरियों में हमारे अपने लोग हों, हमें अपने धर्म के प्रचार-प्रसार की पूरी स्वतंत्रता हो, अपने बच्चों को अपने धर्म की शिक्षा देने का अवसर प्राप्त हो, अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाओं को स्थापित करने और संचालित करने का अधिकार और अपनी भाषा को पढ़ने-पढ़ाने और विकसित करने के लिए समस्त सुविधाएं प्राप्त हों। किन्तु हम यही अधिकार दूसरे धर्म के मानने वालों को देने के लिए तैयार नहीं होते। हम स्वयं अपने अधिकार से अधिक प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन दूसरों को उनका वैध अधिकार भी देना पसन्द नहीं करते और हम कदापि नहीं सोचते कि हमारा यह आचरण न्याय एवं इंसाफ़ ही के ख़िलाफ़ नहीं, बल्कि स्वयं अपने धर्म की सर्वोत्तम परम्पराओं और सर्वोच्च मूल्यों के भी विरुद्ध है। इससे हमारे धर्म का सम्मान नहीं बढ़ता, बल्कि पूरी दुनिया में रुसवाई होती है। धार्मिक लोग यदि उन मूल्यों को जो उनके अपने धर्म की वास्तविक शिक्षाएं हैं, अपने जीवन में वह स्थान दें जो उनके धर्म ने उन्हें देना चाहा है तो हमारे समाज में शांति-ही-शांति होगी।

■■



"ऐ आदम की संतान,
हर इबादत के अवसर पर अपनी
सज्जा से सुशोभित रहो और
खाओ-पियो और सीमा से आगे न
बढ़ो, अल्लाह सीमा से आगे बढ़ने
वालों को पसन्द नहीं करता।"
(क़ुरआन, 7:31)

A Well Wisher

Arqam High School
(Hyderabad)



पहचानें !
झूठ के रंग

सौंदर्य बोध



ज़ईमुद्दीन अहमद

आधारहीन बातें फैलाना, अफ़वाहें फैलाना, झूठी ख़बरें फैलाना समाज में अशांति का कारण बनता है। झूठ अविश्वास, झगड़े और ख़ून-ख़राबे की ओर ले जाता है। कभी-कभी यह बड़े अनिष्ट का कारण बन जाता है और पूरे समाज को अपनी चपेट में ले लेता है। यही कारण है कि झूठ को सब पापों की जड़ कहा गया है। लोगों से आग्रह किया गया है कि वे बिना जांचे-परखे कुछ भी न बोलें। अगर कोई ऐसा करता है तो उसे इसका जवाब देना होगा। निश्चित रूप से आंख, कान और दिल सभी के लिए खुले होने चाहिए।

इन्सान को यह कदापि नहीं सोचना चाहिए कि उसने जो कहा है, उस पर उसकी कोई पकड़ नहीं होगी या उसका ख़ामयाज़ा उसे भुगतना नहीं पड़ेगा। पवित्र ग्रंथ क़ुरआन में कहा गया है कि "उस पर लानत जो झूठा है।"

(क़ुरआन, 3:61)

एक झूठ झगड़े और फ़साद का कारण बनता है, या झूठ के कारण एक आदमी पर अत्याचार होता है, लेकिन आज के ज़माने में झूठ को मामूली बात समझा जाता है। झूठ बहुत सुंदर हो गया है। जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जहां झूठ का सहारा न लिया जाता हो। झूठ बोलना आज के समाज में एक व्यवसाय बन गया है। राजनीति का क्षेत्र झूठ का अड्डा बन गया है। राजनेता ऐसे झूठ बोलते हैं जैसे झूठ बोलना उनका जन्मसिद्ध अधिकार हो।

झूठ के भी कई प्रकार हैं, जिन्हें विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। जानकारों ने सात प्रकार के असत्य बताए हैं जो समाज में सामान्य रूप से पाये जाते हैं। झूठ का पहला प्रकार वह है जिसे काला झूठ कहा जाता है, जिसका उद्देश्य केवल स्वयं को पूरी तरह से परेशानी से बचाना है। दूसरा प्रकार वह है जिसे लाल झूठ कहा जाता है और जो दूसरों से बदला लेने के लिए बोला जाता है। इस झूठ में झूठ बोलने वाला ख़ुद के साथ-साथ दूसरों को भी नुक़सान पहुंचाता है। तीसरे प्रकार के झूठ को ग्रे झूठ कहा जाता है, इसमें झूठे व्यक्ति का भी कुछ फ़ायदा होता है और साथ ही दूसरे का भी फ़ायदा हो जाता है। चौथा है सफ़ेद झूठ। ये झूठ हमारे समाज का अभिन्न अंग बना हुआ है, जो किसी को भावनात्मक पीड़ा से बचाने के लिए बोला जाता है। हिंसा और आक्रामक व्यवहार से बचने के लिए हर कोई सफ़ेद झूठ बोलता है, यानी न चाहते हुए भी किसी की तारीफ़ करनी पड़ती है। पांचवां प्रकार है लाभ आधारित झूठ। इस झूठ में डॉक्टर मरीज़ों और उनके परिजनों को मरीज़ की वास्तविक स्थिति के बारे में जानकारी नहीं देते, जबकि हक़ीक़त इसके विपरीत होने पर मरीज़ को ठीक होने का भरोसा दिलाया जाता है।

छठा प्रकार है द्वेषपूर्ण झूठ। यह झूठ का एक ख़तरनाक रूप है, जिसमें झूठा व्यक्ति व्यक्तिगत लाभ लिए तथ्यों को छुपाता है। सातवां है कपटपूर्ण झूठ। इस प्रकार के झूठ में झूठा व्यक्ति अफ़वाहों का कारख़ाना बन जाता है, जिसमें वह अपने शिकार के चरित्र और प्रतिष्ठा पर दोष मढ़ता है, जिसके परिणाम बहुत ही भयानक साबित होते हैं।

एक और प्रकार का झूठ भी समाज में आम है जोकि उच्च स्तर पर बोला जाता है, जैसे देशों के बीच, युद्धों में, ख़ासकर राजनीतिक दलों के बीच



इसका चलन पाया जाता है। इस प्रकार के झूठ का मामला यह है कि इस झूठ से सभी परिचित होते हैं, यानी बोलने वाले और सुनने वाले को यह पता होता है कि जो कहा जा रहा है वह झूठ है। उदाहरण के लिए, राजनीतिक प्रतिनिधि अपने चुनाव प्रचार के दौरान लोगों से तरह-तरह के वादे करते हैं, लेकिन ख़ुद उसे और जनता को यह मालूम होता है कि वह उन्हें लागू नहीं कर सकता, लेकिन फिर वो झूठ बोलता चला जाता है।

युद्धों में भी यही तरीक़ा अपनाया जाता है। एक देश दावा करता है कि उसने दुश्मन देश को इतना नष्ट कर दिया है, लेकिन दुश्मन देश इससे इन्कार करता है और यह समझाने की कोशिश करता है कि उसका कोई नुक़सान नहीं हुआ है। हालांकि दोनों जानते हैं कि किसका क्या नुक़सान हुआ है। इसका ताज़ा उदाहरण रूस-यूक्रेन युद्ध है। इन दोनों देशों को पता है कि युद्ध में उन्हें क्या नुक़सान हो रहा है, फिर भी वे झूठ पर झूठ बोलते चले जा रहे हैं। इस प्रकार के झूठ को "रानियो" प्रभाव कहा जाने लगा है।

झूठ अब केवल एक शब्द नहीं है, बल्कि एक दर्शन, एक विचार है। इस झूठ ने कई संगठनों को बुरी तरह प्रभावित किया है। सवाल यह है कि इस समय इस शब्द की चर्चा दुनिया भर में क्यों हो रही है? रूस-यूक्रेन युद्ध के बारे में, दुनिया सोच रही थी कि रूस कुछ ही हफ़्तों में यूक्रेन से युद्ध जीत जाएगा, और उस पर नियंत्रण कर लेगा। वास्तव में इन दोनों देशों के बीच कोई बराबरी का मुक़ाबला ही नहीं था, लेकिन यूक्रेन रूस की अपेक्षाओं से अधिक विरोध

> एक झूठ झगड़े और फ़साद का कारण बनता है, या झूठ के कारण एक आदमी पर अत्याचार होता है, लेकिन आज के ज़माने में झूठ को मामूली बात समझा जाता है। झूठ बहुत सुंदर हो गया है। जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जहां झूठ का सहारा न लिया जाता हो। झूठ बोलना आज के समाज में एक व्यवसाय बन गया है। राजनीति का क्षेत्र झूठ का अड्डा बन गया है। राजनेता ऐसे झूठ बोलते हैं जैसे झूठ बोलना उनका जन्मसिद्ध अधिकार हो।

कर रहा है और अभी भी लड़ रहा है।

यह सही है कि यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसी महाशक्तियां यूक्रेन के पीछे खड़ी हैं, लेकिन रूसी रक्षा विशेषज्ञ और रक्षा रणनीतिकार युद्ध की लंबाई को देखते हुए इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि युद्ध के लंबा खिंचने का एक कारण ''रानियो'' प्रभाव भी है, यह प्रभाव जनता को हक़ीक़त से वाक़िफ़ नहीं होने देता। इस झूठ के बारे में सबको मालूम होता है कि यह हक़ीक़त नहीं है, झूठ है, लेकिन फिर भी इसको स्वीकार किया जाता है। बोलने और सुनने वाले दोनों जानते हैं कि जो कहा जा रहा है वह झूठ है। समाचार फ़र्ज़ी है, रिपोर्टिंग झूठ पर आधारित है।

यह झूठ इतना संगठित होता है कि उसे स्वीकार करने के अलावा कोई चारा नहीं रहता है। झूठ व्यवस्था का हिस्सा बन जाता है और हर कोई उस झूठ का अभिनय करने लगता है।

बचपन में मैंने एक कहानी सुनी थी कि एक राजा था, जिसे न सुनने की आदत नहीं थी। वह कोई आलोचना सहन नहीं कर सकता था। एक दिन वह बिना कपड़ों के नंग-धड़ंग बाहर आ जाता है, लेकिन उसकी नाराज़गी के डर से कोई उसे नहीं बताता कि वह नंगा है। सब उसकी प्रशंसा करते हैं कि उसके कपड़े अनोखे हैं, शानदार हैं। अंत में, एक छोटा बच्चा बोल पड़ता है कि राजा नंगा है। यह कहानी बताती है कि लोग जानते हुए भी झूठ बोलते हैं और सत्ता सच सुनने से कतराती है।

राजनेताओं के साथ भी यही स्थिति है, उन्हें यह विश्वास दिलाया जाता है कि वे ही जीत रहे हैं, परिणाम आने तक उनको पता नहीं चलता। वे सच सुनना नहीं चाहते, इसलिए उन्हें सही जानकारी नहीं दी जाती, उनके कारिंदे उन्हें वही बताते हैं जो वे सुनना चाहते हैं। उसको मालूम होता कि वह मैदान हार रहा है, लेकिन वह इस तथ्य को तब तक स्वीकार नहीं करता जब तक कि वह पूरी तरह से हार नहीं जाता।

यही हाल उस व्यक्ति का भी होता है जो किसी बीमारी से ग्रस्त हो। वह बीमारी को तब तक स्वीकार नहीं करता जब तक कि बीमारी उस पर हावी न हो जाए। कॉर्पोरेट निकायों के भीतर भी ऐसी स्थिति आ जाती है। उनके भीतर भी एक समय ऐसा आता है कि वे वास्तविकता को स्वीकार करने से इन्कार करते हैं। असफलता के कारण सबको मालूम होते हैं।

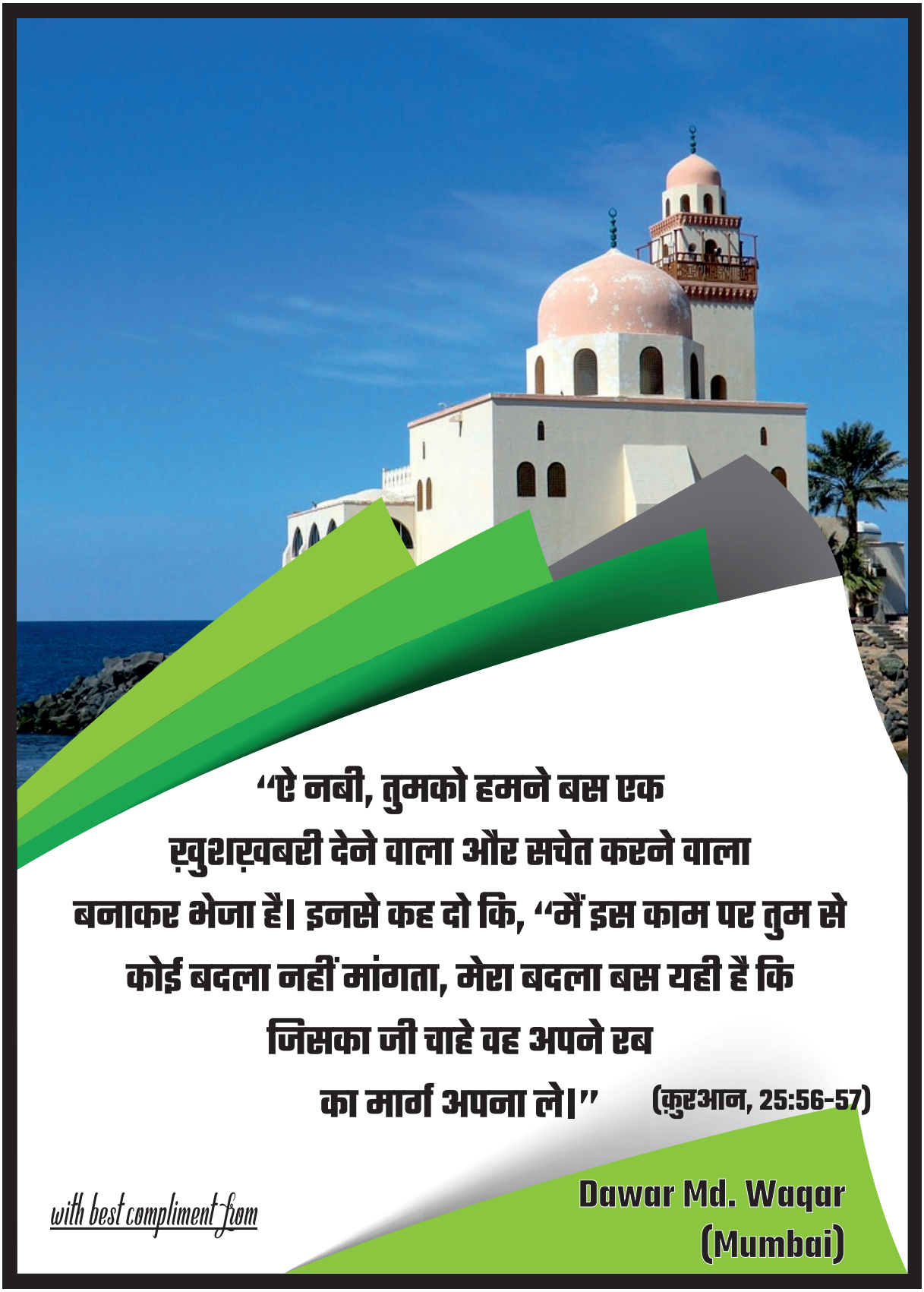
असफलता के कारणों के बारे में सभी अलग-अलग बातें भी करते रहते हैं, लेकिन सच्चाई जानने के बावजूद वे सामूहिक रूप से सच को स्वीकार नहीं करते, क्योंकि वे झूठ के कृत्रिम जाल में जकड़े हुए होते हैं।

यह मनुष्य की वह अवस्था है, जिसमें वह केवल वही सुनना चाहता है जो उसे अच्छा लगता है। वह केवल अपनी प्रशंसा सुनना पसंद करता है। वह यह सुनकर ख़ुश होता है कि वही प्रतिभाशाली है, सुंदर है, लेकिन यही चीज़ उसे अंततः ले डूबती है। इस तरह के झूठ से लड़ना कठिन है। जब इस प्रकार का समाज विकसित होता है, तो यथार्थवाद समाज से ग़ायब हो जाता है। इसलिए आपने देखा होगा कि समाज में बनावटीपन का बोलबाला है। लोग बनावटी दुनिया में रहना पसंद करने लगे हैं और झूठी शान जताते नज़र आते हैं। इसका जीता-जागता उदाहरण शादी समारोह हैं, यहां आप देख सकते हैं कि किस प्रकार बनावटीपन से काम लिया जाता है। हैसियत से अधिक ख़र्च करके लोग झूठी शान का दिखावा करते हैं। इस प्रकार की झूठी शान में न केवल उसका सांसारिक नुक़सान है, बल्कि परलोक में भी नुक़सान उठाना पड़ता है। झूठ लोगों की दुनिया को भी तबाह कर देता है और परलोक में भी इसका परिणाम पीड़ादायी होता है।

"ऐ इसराईल की संतान, तनिक याद करो मेरी उस नेमत को जो मेरी ओर से तुम पर हुई। मेरे साथ तुम्हारी जो प्रतिज्ञा थी उसे तुम पूरा करो तो मेरी जो प्रतिज्ञा तुम्हारे साथ थी उसे मैं पूरा करूं, और मुझ ही से तुम डरो।" (क़ुरआन, 2:40)

With Best Compliments From :

Noor Muhammad Hotal
(Mumbai)



"ऐ नबी, तुमको हमने बस एक
ख़ुशख़बरी देने वाला और सचेत करने वाला
बनाकर भेजा है। इनसे कह दो कि, "मैं इस काम पर तुम से
कोई बदला नहीं मांगता, मेरा बदला बस यही है कि
जिसका जी चाहे वह अपने रब
का मार्ग अपना ले।" (क़ुरआन, 25:56-57)

with best compliment from

Dawar Md. Waqar
(Mumbai)

स्कूली शिक्षा:

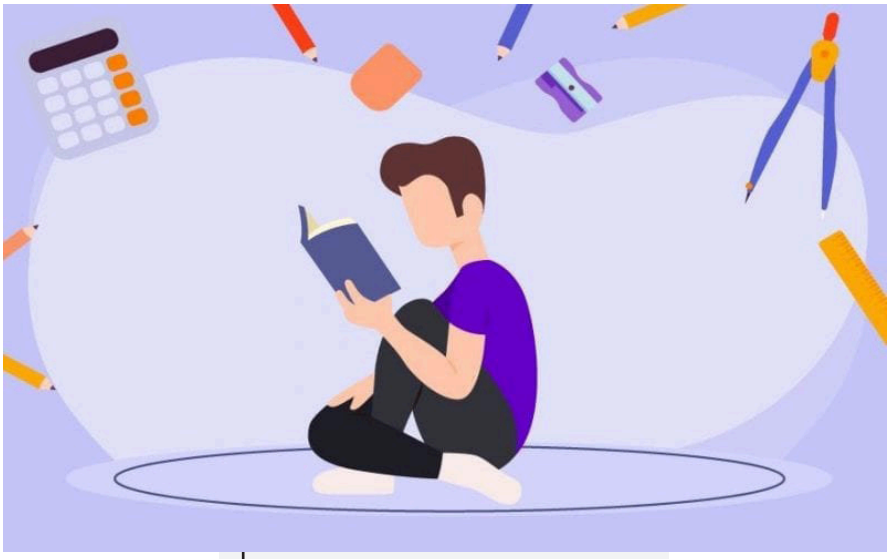
नवाचारों के साथ नैतिक आदर्शों को क़ायम रखने की चुनौती

मुख्य स्तम्भ



सुफ़ियान अहमद

इस बात को कहने, सुनने, लिखने या दोहराने की कोई आवश्यकता नहीं कि बच्चों के जीवन में स्कूली शिक्षा का क्या महत्व है। स्कूली शिक्षा ही वह शिक्षा है, जिससे किसी बच्चे के भविष्य की बुनियाद का निर्माण होता है। बच्चों की बेहतरीन शिक्षा-दीक्षा और प्रशिक्षण न केवल उनके अभिभावकों का परम दायित्व है, बल्कि समाज और सरकार का भी यह कर्तव्य है कि वह बच्चों के शिक्षण एवं प्रशिक्षण का समुचित प्रबंध करे। भारत सहित बहुत से देशों में तो प्राथमिक शिक्षा को बच्चों का मौलिक अधिकार घोषित किया जा चुका है।



बच्चे कोमल एवं सुकुमार पौधों की तरह होते हैं, जिस प्रकार एक कोमल पौधे को मिट्टी, खाद, पानी और रोशनी देने के साथ सही वातावरण और संभावित ख़तरों से बचाने की ज़रूरत होती है। उसी तरह बच्चों के शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास तथा माहौल में फैली बुराइयों से बचाव और बेहतरीन बुनियादी शिक्षा एवं प्रशिक्षण अनिवार्य है।

अगर इमारत बनाने वाला पहली ईंट सही रखने की मेहनत नहीं कर पाता, फिर चाहे वह आसमान तक भी दीवार बना ले, दीवार का टेढ़ापन दूर नहीं कर सकता।

दरअस्ल, शिक्षा एवं प्रशिक्षण से अभिप्राय यह है कि बच्चों की योग्यताओं को बढ़ाया जाए और उनकी प्रतिभाओं को उभारा जाए, उन्हें सही दिशा दी जाए। उनके भीतर सकारात्मक सोच और उच्च नैतिक मूल्यों को विकसित किया जाए। बच्चे की परवरिश के शुरुआती दौर में ही यदि उसके भीतर नैतिक मूल्यों का ख़मीर शामिल कर दिया जाए तो बच्चा बुराइयों के ख़तरों से ख़ुद मुक़ाबला कर लेगा।

अगर इमारत बनाने वाला पहली ईंट सही रखने की मेहनत नहीं कर पाता, फिर चाहे वह आसमान तक भी दीवार बना ले, दीवार का टेढ़ापन दूर नहीं कर सकता। इसलिए बच्चों के जीवन में प्राथमिक शिक्षा यानी स्कूलिंग की भूमिका बेहद अहम है। मां-बाप के बाद बच्चों में शिक्षा के प्रति लगाव पैदा करने और इस मैदान में उन्हें सफलता दिलाने में शिक्षकों की भूमिका बहुत अहम होती

है। शिक्षक यदि मेहनत और ईमानदारी के साथ बच्चों को प्रशिक्षित करें और उनमें उच्च नैतिक मूल्यों को पैदा करने की कोशिश करें, तो बच्चे समाज में अपनी पहचान बरक़ार रख पाएंगे, समाज में सुधार होगा और वे अच्छे नागरिक बन सकेंगे, देश व समाज को तरक़्क़ी के रास्ते पर ले जाने वाले बनेंगे।

दुनिया में हर काम के लिए हम एक विशेष प्रशिक्षण से गुज़रने की ज़रूरत महसूस करते हैं, लेकिन यह एक कड़वी सच्चाई है कि आज बच्चों की शिक्षा और उनके प्रशिक्षण पर उतना ध्यान नहीं दिया जा रहा है जितना कि दिया जाना चाहिए। हालांकि आज स्कूलों की बहुतायत है। बस्तों का बोझ, होमवर्क की भरमार और ट्यूशन सेंटरों और कोचिंग सेंटरों का दौर है, इसके बावजूद बच्चों की शैक्षिक और नैतिक स्थिति अच्छी नहीं है। आमतौर पर लोगों की ज़बान पर इसकी शिकायत रहती है। पढ़े-लिखे और समझदार लोग इससे चिंतित हैं।

इसका पहला कारण यह है कि शिक्षा एवं प्रशिक्षण के जो चरण प्राथमिक स्तर पर तय होने चाहिए, उसकी तरफ़ ध्यान या तो कम हो गया है, या फिर ध्यान दिया ही नहीं जा रहा है। दूसरा कारण है स्कूलों में नैतिक शिक्षाओं के प्रति उदासीनता, इसके नतीजे में जो सूरतेहाल नज़र आ रही है वह संतोषजनक नहीं है। आज जो बच्चे हमारी गलियों और मुहल्लों में नज़र आ रहे हैं, उनमें बुनियादी नैतिक मूल्यों का अभाव साफ़ तौर पर देखा जा सकता है। यह स्थिति चिंताजनक है। ऐसी स्थिति में हमें अपनी प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था और शिक्षकों की भूमिका की समीक्षा करनी होगी।

बच्चों के शिक्षण एवं प्रशिक्षण में यदि बुनियादी उसूलों का ध्यान रखा जाए तो उन्हें आसानी के साथ हरेक मामले में बेहतर रवैया अपनाना सिखाया जा सकता है।

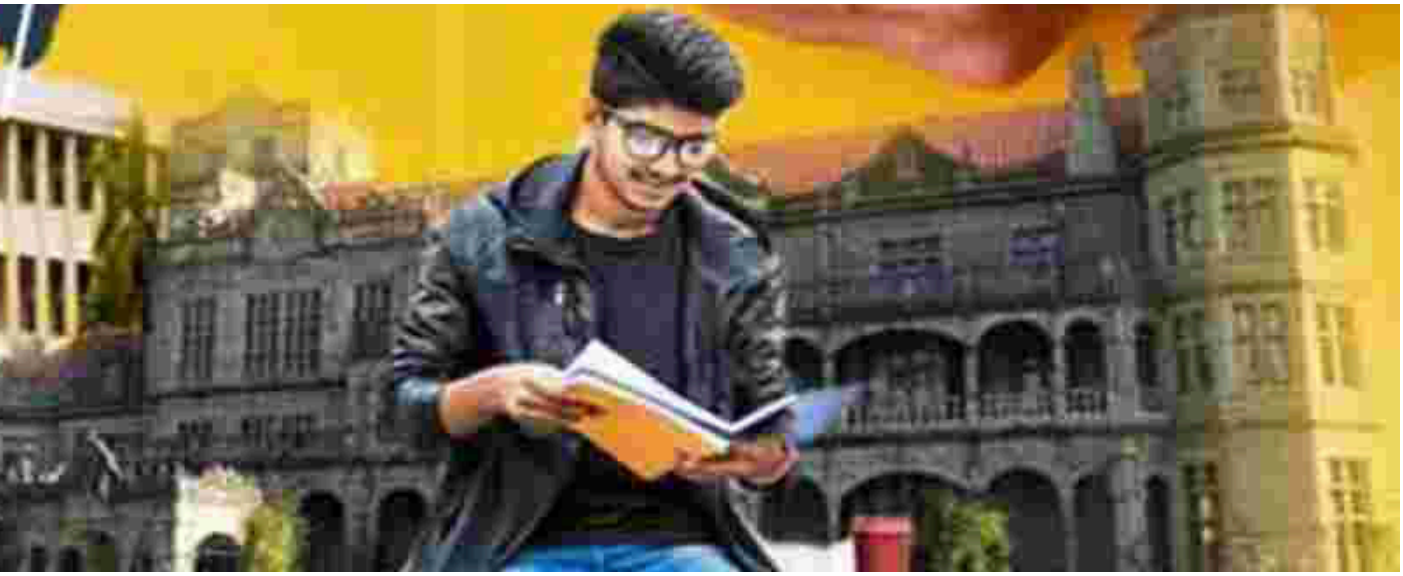


आज बच्चों की सर्वांगीण शिक्षा समय की सबसे बड़ी मांग है। ऐसी स्थिति में प्राथमिक स्कूलों और उसके शिक्षकों की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि वे अपने अस्ल दायित्व को अदा करना ज़्यादा ज़रूरी समझें। उन्हें यह समझना होगा कि बच्चों की शिक्षा की भारी ज़िम्मेदारी अदा करना कोई मामूली काम नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी सम्मानजनक और सार्थक ज़िम्मेदारी है, जिसे ईश्वर ने उनके लिए तय की है।

बच्चों के शिक्षण एवं प्रशिक्षण में यदि बुनियादी उसूलों का ध्यान रखा जाए तो उन्हें आसानी के साथ हरेक मामले में बेहतर रवैया अपनाना सिखाया जा सकता है। उदाहरण के लिए आज सोशल मीडिया का दौर है। सोशल नेटवर्किंग के अन्धाधुंध इस्तेमाल ने बहुत-से ख़तरे पैदा कर दिए हैं। सुनी-सुनाई ख़बरों को सोशल नेटवर्किंग का हिस्सा बनाना, अनैतिक पोस्ट्स को साझा करना और आगे बढ़ाना और एकांत में अश्लील तस्वीरें और वीडियो देखना, इन चीज़ों पर बच्चों के नैतिक प्रशिक्षण के बिना क़ाबू नहीं पाया जा सकता। हर चीज़ के लिए क़ानून बनाना

और उसको लागू करना ही काफ़ी नहीं, शिक्षकों की यह ज़िम्मेदारी है कि इस मामले में बच्चों को सही रवैया अपनाने की सीख दें तथा एक साफ़-सुधरे समाज के निर्माण के लिए नैतिक रूप से उन्हें बेहतर बनाने की कोशिश करें।

हर चीज़ के अच्छे और बुरे दोनों पहलू होते हैं और उसके अच्छे पहलू ही को इन्सानियत के फ़ायदे के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसी तरह टेक्नॉलोजी यानी स्मार्टफ़ोन, इंटरनेट, फेसबुक, मोबाइल ऐप्स आदि के सही इस्तेमाल की शिक्षा बच्चों को देनी चाहिए।



स्कूली स्तर पर शिक्षकों का यह नैतिक एवं सामाजिक दायित्व है कि वे बच्चों को यह बताएं कि हम जो कुछ देखते, सुनते और सीखते हैं, परलोक में ईश्वर के यहां उसकी जवाबदेही होगी। जैसा कि कुरआन में कहा गया है, "यक़ीनन आंख, कान और दिल, सब ही के बारे में पूछ-गछ होनी है।"

(कुरआन, 17:36)

बच्चों की सर्वांगीण शिक्षा समय की सबसे बड़ी ज़रूरत है और इसमें शिक्षकों की भूमिका बेहद अहम होती है। शिक्षा के साथ-साथ बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करना शिक्षकों की अहम ज़िम्मेदारी है। इस ज़िम्मेदारी को बेहतरीन तरीक़ से अदा करके वे बच्चों को बेहतर इन्सान बना सकते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में अहम बदलाव आए हैं। शिक्षा का अधिकार क़ानून अमल में आने से एक ओर जहां सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवारों के बच्चों को निजी स्कूलों में पढ़ने का अवसर मिला, तो वहीं दूसरी ओर व्यवसायपरक शिक्षा के माध्यम से लोगों को रोज़गार से जोड़ने के प्रयास भी किए जा रहे हैं, लेकिन पढ़ाई की गुणवत्ता और अनुशासन को लेकर वह गंभीरता दिखाई नहीं देती, जिसकी आज बेहद ज़रूरत है। कई विषयों में प्रैक्टिकल की कमी वर्तमान शिक्षा की सबसे बड़ी ख़ामी है, क्योंकि प्रैक्टिकल के माध्यम से छात्र बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। नई पीढ़ी के शिक्षकों को नवाचारों के साथ आदर्शों की परंपरा भी क़ायम रखनी होगी।

शिक्षक मार्गदर्शक न बनकर छात्रों के शुभचिंतक व सहयोगी बनें। इसके लिए मित्रवत व्यवहार की ज़रूरत है। तभी छात्र शिक्षक से अपनी समस्या बता पाएगा और शिक्षक उनका प्रभावी ढंग से समाधान कर सकेंगे। शिक्षकों को अपना व्यवहार लचीला रखकर बदलते समय के साथ अपनी कार्यशैली को बदलकर इस वैश्विक युग में छात्रों के लिए उपयोगी बनना होगा। शिक्षकों को अपने उद्देश्य के प्रति सजग रहकर धैर्यशीलता बनाए रखनी चाहिए। आज के छात्र अधिक ऊर्जावान हैं, ज़रूरत है केवल उन्हें सही दिशा देने की।

स्कूली शिक्षा में नवाचारों और पुरानी पीढ़ी के शिक्षकों के आदर्शों के बीच संतुलन स्थापित करना भी आवश्यक है। इसके लिए ज़रूरी है कि बच्चों को विद्यालय स्तर पर ही विभिन्न धर्मों के प्रमुख महापुरुषों के त्याग, तपस्या, उनके सद्कर्मों तथा सद्वचनों व असत्य और अधर्म के विरुद्ध उनके संघर्षों से संबंधित संक्षिप्त पाठ व उनके द्वारा मानवता, प्रकृति-प्रेम संबंधी संदेश बच्चों को दिया जाए ताकि वे आगे चलकर न केवल आत्मनिर्भर बन सकें, बल्कि समाज और राष्ट्र-निर्माण में भी अपना समुचित योगदान दे सकें।

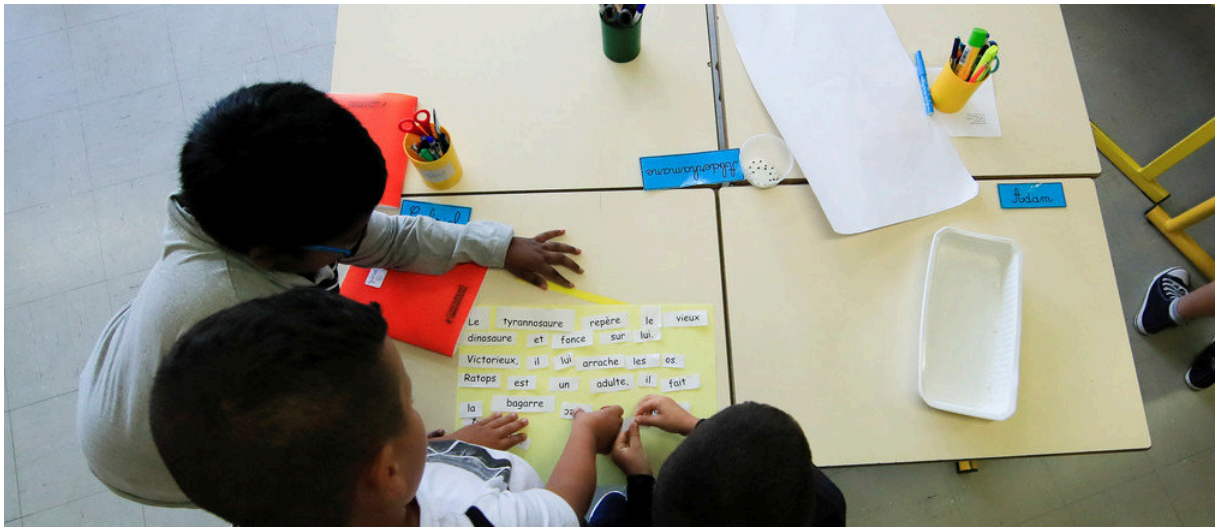
■■

“यक़ीनन
अल्लाह की
दृष्टि में ज़मीन पर
चलने वाले प्राणियों में
सबसे बुरे वे लोग हैं जिन्होंने
सत्य को मानने से इनकार कर दिया।
फिर किसी तरह वे इसे स्वीकार करने को
तैयार नहीं हैं।” (क़ुरआन, 8:55)

A Well Wisher

Dildar Ahmad Shaikh
(Mumbai)

सीखने के संकट से जूझती स्कूली शिक्षा



अभिमत



डॉ. रुक्मिणी बनर्जी

सन, 2005 से साल दर साल एनुअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशन रिपोर्ट्स इस बात को लगातार उजागर करती आ रही है कि बच्चों के पढ़ने और गणित की क्षमता का स्तर चिंताजनक रूप से नीचे है। ग्रामीण भारत के पांचवीं कक्षा के क़रीब आधे बच्चे कक्षा दो के स्तर का पाठ नहीं पढ़ पाते। ये निष्कर्ष न केवल बच्चों की स्कूली उपलब्धियों की दयनीयता का ख़ुलासा करते हैं, बल्कि इस बात का भी अनुमान देते हैं कि जब ये बच्चे उच्च प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में पहुंचेंगे तो किस हाल में होंगे।

बच्चे कक्षाओं में आगे बढ़ते हुए बेशक सीखते हैं, लेकिन सीखने का उनका ग्राफ़ समय के सापेक्ष सपाट रहता है। उदाहरण के लिए सन 2018 में आठवीं कक्षा के क़रीब 25 प्रतिशत बच्चों को आसान से पाठ को पढ़ पाने में मुश्किल आ रही थी (एनुअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशन रिपोर्ट्स-2018)। एनुअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशन रिपोर्ट्स के आंकड़े बताते हैं कि कुछ मामलों में तो मौजूदा समूह का सीखने का ग्राफ़ पिछले समूहों की बनिस्बत कहीं नीचे है।

विद्यार्थियों की उपलब्धियों पर किए गए अन्य सर्वेक्षण और सरकारी संस्थाओं व विशेषज्ञों के शोधों से मिलने वाले आंकड़े भी उन प्रवृत्तियों की पुष्टि करते हैं जो एनुअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशन रिपोर्ट्स के आंकड़ों से स्पष्ट होती है। हालांकि अन्य सभी अध्ययनों में अलग तरह के टूल और पद्धतियों का इस्तेमाल किया गया। नामांकन की ऊंची दर के बावजूद ठीक से सीख न पाने की यह बीमारी सिर्फ़ भारतीय शिक्षा व्यवस्था तक सीमित नहीं है। वास्तव में पिछले 10 वर्षों में, जब दुनिया भर से बुनियादी शिक्षा के आंकड़े सामने आ रहे हैं और शोधकर्ताओं ने बच्चों के नामांकन से आगे देखना शुरू किया तो

एशिया और सब-सहारा अफ़्रीक़ा के अन्य देशों से भी इसी तरह के प्रमाण मिल रहे हैं।

किसी समस्या को पहचानना, स्वीकार करना और समझना, उसके हल की राह निकालने के आवश्यक चरण हैं। बुनियादी कौशलों का निर्माण करना कम से कम प्राथमिक विद्यालय की मुख्य गतिविधि होनी चाहिए। हमारी उच्चतम प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि हम वर्ष 2025 तक सभी प्राथमिक व इनसे आगे के विद्यालयों में बुनियादी साक्षरता व गणितीय क्षमता का लक्ष्य हासिल कर लें। उपलब्ध प्रमाणों और शहरी झुग्गी-बस्तियों व ग्रामीण समुदायों के बच्चों, परिवारों व विद्यालयों के साथ काम करने के हमारे पिछले 25 वर्षों के संचित अनुभवों के आधार पर हम भरोसे के साथ कह सकते हैं कि यदि हम वर्ष 2025 तक कक्षा पांच और आगे के विद्यार्थियों में बुनियादी साक्षरता और गणितीय क्षमता की प्राप्ति का लक्ष्य हासिल करना चाहते हैं तो प्रारंभिक वर्षों में बुनियाद को इतनी मज़बूती से डालना होगा कि बच्चे आगे छलांग लगा पाएं।

आज पीछे छूट जाने की जो परिघटना इतने व्यापक स्तर पर दिखाई देती है तो उसका एकमात्र कारण यही है कि सही चीज़ें सही वक़्त पर नहीं की गईं। कम से कम जो बच्चे आज विद्यालय जाना शुरू कर रहे हैं, उनके लिए हमारा उद्देश्य होना चाहिए कि वे सीखने की सुविचारित गति से ऊपर उठते हुए इस मार्ग पर निर्बाध ढंग से यात्रा कर सकें ताकि जब वे प्राथमिक विद्यालय से बाहर निकलें तो वे आगे की शिक्षा और जीवन के लिए अच्छी तरह तैयार हों।



प्रारंभिक वर्षों (3 से 8 वर्ष की आयु) को बुनियादी चरण माना जाना चाहिए और इसे सतत होना चाहिए। इस आयु वर्ग के बच्चों की एक लचीली, बहु-आयामी, बहु-स्तरीय, खेल आधारित, गतिविधि-आधारित, खोज-आधारित शिक्षा तक पहुंच होनी चाहिए।

यह कहना उचित होगा कि भारत के प्रमुख शैक्षिक प्रतिष्ठान, मसलन केंद्र, राज्य व ज़िला स्तरीय सरकारी संस्थाओं के पास, जिन्होंने अब तक विद्यालयों को निर्देशित किया, (जैसे एनसीईआरटी, एससीईआरटी या डायट), विद्यालय-पूर्व आयु वर्ग के साथ काम का अनुभव नहीं के बराबर रहा है। निजी क्षेत्र के विद्यालयों में विद्यालय-पूर्व कक्षाएं अमूमन प्राथमिक विद्यालय का हिस्सा होती हैं और इनमें ज़्यादातर नामांकन लोअर या अपर किंडरगार्टन में होता है। तथापि, शोध बताते हैं कि इन संस्थाओं में भी प्रारंभिक आयु के बच्चों के साथ विद्यालय-जैसी गतिविधियां ही की जाती हैं और वे इन बच्चों को लचीली, खेल-आधारित एवं विकास अनुरूप ऐसी गतिविधियां नहीं कराते जो नन्हे-मुन्ने मस्तिष्कों के विकास के अनुरूप हों।

आंबेडकर विश्वविद्यालय और एनुअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशन रिपोर्ट्स सेंटर द्वारा वर्ष 2017 में किए गए अध्ययन के अनुसार, ये बच्चे विद्यालय-पूर्व शिक्षा में कई वर्ष बिताने के बाद भी कक्षा एक के लिए तैयार नहीं हो पाते। हर कोई इस बात को जानता है कि आंगनवाड़ियों में बाल प्रोत्साहन या विकास को जितनी प्राथमिकता मिलनी चाहिए, वह नहीं मिल पाती है।

अभिभावक कई वजहों से प्राइवेट स्कूलों को ज़्यादा आकर्षक पाते हैं। उनमें एक बड़ी वजह पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं की मौजूदगी भी है। जो अभिभावक अपने बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं, लेकिन उनके पास उन्हें प्राइवेट स्कूलों की पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में भेजने के लिए पैसे नहीं हैं, वे अपने बच्चों को जल्दी से जल्दी सरकारी स्कूलों की पहली कक्षा में भेज देना



अपेक्षित लक्ष्यों को साधने और व्यावहारिक राह बनाने के बीच संतुलन कायम करना कोई आसान काम नहीं है। व्यवहार को नीतियों से लगातार रोशन करते रहना और हर बढ़ते कदम से सीख लेना ज़रूरी है। छोटे और प्राथमिक विद्यालय की उम्र के बच्चों के लिए कुछ लक्ष्यों को चिन्हित करना ज़रूरी है, जो उनके भावी विकास के लिए अनिवार्य हैं।

चाहते हैं, क्योंकि सरकारी स्कूलों में पूर्व-प्राथमिक कक्षाएं नहीं लगतीं। वास्तव में, आयु आधारित कक्षा वितरण की तुलना बताती है कि अभी हाल तक सरकारी स्कूलों की पहली कक्षा के बच्चे प्राइवेट स्कूलों के अपने समतुल्यों के मुक़ाबले उल्लेखनीय रूप से छोटे पाए गए।

समय से पहले औपचारिक विद्यालयी शिक्षा शुरू करने और कक्षा एक की अकादमिक अपेक्षाओं पर खरा उतरने की चुनौती भी बच्चों के सही विकास में बाधा डालती है। सरकारी विद्यालयों में पूर्व-प्राथमिक कक्षाएं शुरू करने और आंगनवाड़ी से पूर्व-प्राथमिक व पूर्व-प्राथमिक से कक्षा 1 में जाने की राह सुगम बनाने से बच्चों को सही आयु व सही समय पर विकासात्मक रूप से सही गतिविधियां मिल पाएंगी और इससे उनकी बुनियादी शिक्षा की राह मज़बूत बनेगी।

आंकड़े बताते हैं कि पूरे भारत में क़रीब 50 प्रतिशत बच्चे पढ़ने के अलग-अलग स्तर पर अटके हुए हैं-कुछ अक्षरों तक को नहीं पहचान पाते, तो कुछ सरल वाक्यों से जूझते नज़र आते हैं। अटके हुए बच्चों का यह व्यापक दायरा प्राथमिक विद्यालय में सीखने-सिखाने की सबसे बड़ी चुनौती है। शिक्षक के लिए यह रोज़ की दुविधा है कि वह किन बच्चों को पढ़ाए? और उन्हें क्या पढ़ाए? वर्षों से हमारी विद्यालयी व्यवस्था बड़ी निष्ठा से पाठ्यक्रम की पढ़ाई पर लंगर डाले हुए है, जो कक्षा आधारित पाठ्य-पुस्तकों से निर्देशित की जाती है।

एक सामान्य शिक्षक कक्षा के सबसे अगड़े बच्चों पर ही ध्यान देता है और बाक़ी को उनके हालात पर जूझने के लिए छोड़ देता है। शिक्षकों को दोष नहीं दिया जा सकता। वास्तव में, शिक्षा का अधिकार (आरटीई) क़ानून कहता है कि शिक्षक को निर्धारित समय में समूचे पाठ्यक्रम को ज़रूर पूरा कर लेना चाहिए। (आरटीई एक्ट 2009, 24-सी)

दिलचस्प है कि नई शिक्षा नीति का प्रारूप विद्यालय की तैयारी में कमी सहित इस शैक्षिक संकट के कई कारण गिनाता है-बुनियादी साक्षरता व गणितीय क्षमता पर पाठ्यक्रम में बहुत कम ज़ोर, पढ़ाने की पद्धतियां, भाषा की भूमिका, शिक्षक की तैनाती में मुश्किलें और स्वास्थ्य व पोषण में कमी आदि, लेकिन यह अति महत्वाकांक्षी पाठ्यक्रमों के नकारात्मक परिणामों या कक्षा के सर्वोत्कृष्ट बच्चों को ही पढ़ाने की आम परिपाटी पर सीधे तौर पर कुछ नहीं कहता।

अपेक्षित उपलब्धियों के आकार, गहराई और मात्रा को देखते हुए, हमें कम से कम पांच साल या ज़्यादा समय के लिए एक निरंतर व उच्च प्राथमिकता के प्रयासों की ज़रूरत है। निर्धारित लक्ष्य हासिल करने के लिए हमें विद्यालयी व्यवस्था के प्रमुख तत्वों, जैसे-शिक्षक प्रशिक्षण, टीएलएम, सतत शिक्षक सहायता, मेंटरिंग-मॉनिटरिंग, मूल्यांकन और ग़लतियों में सुधार आदि पर ज़ोर देना होगा। अपेक्षित लक्ष्यों को साधने और व्यावहारिक राह बनाने के बीच संतुलन क़ायम करना कोई आसान काम नहीं है। व्यवहार को नीतियों से लगातार रोशन करते रहना और हर बढ़ते क़दम से सीख लेना ज़रूरी है। छोटे और प्राथमिक विद्यालय की उम्र के बच्चों के लिए कुछ लक्ष्यों को चिन्हित करना ज़रूरी है, जो उनके भावी विकास के लिए अनिवार्य हैं। ■■

(लेखिका प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन की सीईओ हैं। साभार,आईओआई)



किसी समस्या को पहचानना, स्वीकार करना और समझना, उसके हल की राह निकालने के आवश्यक चरण हैं। बुनियादी कौशलों का निर्माण करना कम से कम प्राथमिक विद्यालय की मुख्य गतिविधि होनी चाहिए।



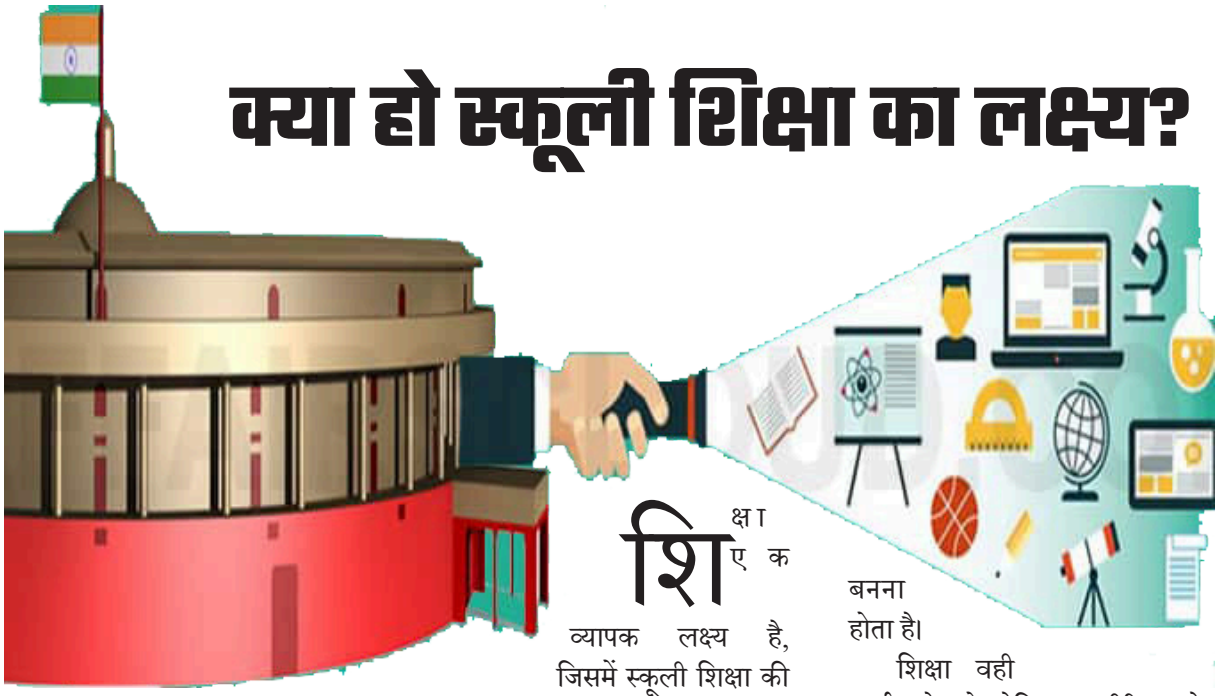
“ईश्वर पर दृढ आस्था के साथ अडिग रहें, अच्छे कर्म करते रहें, जिस चीज़ से रोका गया है रुके रहें, ईश्वरीय आदेश को मानें, ईशपरायणता के साथ उपकार की नीति अपनाए रखें, तो ईश्वर ऐसे सुचरित्र लोगों से बहुत प्रेम करता है।”

(क़ुरआन,5:93)

A Well Wisher

A Rahman Khan
Mumbai

क्या हो स्कूली शिक्षा का लक्ष्य?



समाधान



डॉ. प्रदीप कुमार

शिक्षा एक व्यापक लक्ष्य है, जिसमें स्कूली शिक्षा की अहमियत सबसे ज़्यादा है। स्कूली शिक्षा बच्चों के अंदर विचार और विवेक को विकसित करती है। शिक्षा को सर्वव्यापी बनाने की सोच और यह विचार कि सभी बच्चों को स्कूल जाना चाहिए, शिक्षा और विकास के क्षेत्र में काम कर रहे हम में से अधिकांश लोगों के दिलो-दिमाग़ पर छाया हुआ है। स्कूली शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों में मौलिक अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति तथा सौन्दर्यबोध की समझ को विकसित कर सके। स्कूली शिक्षा का लक्ष्य बच्चों में वांछनीय गुणों का विकास करना होना चाहिए। अतः इसका क्षेत्र किसी विशेष स्थान अथवा देश तक सीमित न रहकर सम्पूर्ण मानव जाति होना चाहिए।

शिक्षा के उद्देश्यों का सम्बन्ध सम्पूर्ण समाज के समस्त छात्रों से है। इन उद्देश्यों का निर्माण अत्यन्त उत्तरदायित्वपूर्ण है। समाज की उन्नति अथवा अवनति शिक्षा पर ही निर्भर करती है। जिस समाज में जिस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था होती है, वह समाज वैसा ही बन जाता है। शिक्षा प्राप्त करने के लिए सबसे पहले एक अच्छा नागरिक बनना बहुत ज़रूरी है। उसके बाद व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सफल बनना होता है।

शिक्षा वही सार्थक है, जो बौद्धिक, शारीरिक और व्यावहारिक स्तर पर जीवन को सक्षम और बेहतर बना सके। शिक्षा का उद्देश्य कुछ किताबों या कुछ अध्यायों को रटना कदापि नहीं है, बल्कि उनसे सीखना है। सरल शब्दों में यदि कहा जाए तो शिक्षा का उद्देश्य बच्चों के सीखने की क्षमता और प्रवृत्ति का विकास करना है। इसलिए शिक्षा व्यावहारिक और रुचिकर होनी चाहिए, जिससे वह बच्चों को सीखने की दिशा में प्रेरित कर सके।

हमारी आज की शिक्षा पद्धति किताबों को रटने पर आधारित है और यही कारण है कि शिक्षा के उपरांत बहुत कम शिक्षार्थी ऐसे होते हैं, जो व्यवसाय या नौकरी के लिए बिल्कुल तैयार हो पाते हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था में आज भी सबसे ज़्यादा ज़ोर अंकों पर दिया जाता है, न कि सीखने और अधिक से अधिक नॉलेज हासिल करने पर। इसका एक बड़ा कारण यह भी है कि अधिकतर शिक्षा कक्षा तक ही सीमित है और कक्षा के बाहर सीखने की गतिविधियों पर बहुत ध्यान दिया जाता है। जबकि ठीक इसका उल्टा होना चाहिए। सीखने के अवसर कक्षा से बाहर की गतिविधियों में अधिक हैं, न कि सिर्फ़ कक्षा में। इस

अनुपात को बदलकर ही हम शिक्षा को उपयोगी बना सकते हैं।

जीवन में प्रासंगिकता का बहुत महत्व है। आज के समय में जब संसार का सारा सूचना भंडार गूगल की एक क्लिक पर उपलब्ध है और जब प्रत्येक बच्चे के हाथ में स्मार्ट-फ़ोन और कंप्यूटर है, तो ऐसे में सूचनाओं को रटने की क्षमता को पुरस्कार देना किस तरह की प्रासंगिकता है। सूचना और तकनीक में प्रतिदिन और प्रतिपल विकास और बदलाव हो रहे हैं।

इतिहास, गणित, मानव व प्रकृति संरचना और यहां तक की भूगोल जैसे विषयों में भी आए दिन नई खोजें हो रही हैं, इन्हें किताबों के माध्यम से प्रतिवर्ष बदलना संभव नहीं होगा, जो कल प्रासंगिक था, आज शायद नहीं है फिर उसे रटने का क्या औचित्य है। उसे तो समझना और सीखना ही प्रासंगिक है।

आज के समय में शिक्षा का पाठ्यक्रम और उसकी तकनीक में बदलाव की आवश्यकता महसूस की जा रही है। शिक्षा की तकनीक से अभिप्राय पढ़ाने के ढंग और पढ़ाने में टेक्नोलॉजी के प्रयोग, दोनों से है। पढ़ाने के ढंग से तात्पर्य शिक्षा को रुचिकर बनाने से है। उसमें चित्रों, प्रेरक कहानियों और व्यावहारिकता का अधिकतम समावेश करना होगा। ऐसी शिक्षा को विद्यार्थियों को रटने की आवश्यकता नहीं होगी, बल्कि वे उसे आसानी से सीख लेंगे।

सीखने की प्रक्रिया में प्रैक्टिकल का अपना एक अलग महत्व है। इसलिए अब समय आ गया है कि स्कूली शिक्षा के लिए हम इस तरह के अनुभवों के आधार पर नई शिक्षा पद्धति तैयार करें, जिसमें प्रैक्टिकल पर ज़ोर हो। जब ऐसा होगा तो बच्चों में सीखने की क्षमता का विकास होगा और वे सिर्फ़ स्कूलों में ही नहीं, बल्कि जीवन में भी सफल होंगे।

प्रैक्टिकल पर आधारित शिक्षा का एक उत्कृष्ट उदाहरण लेह के सोनम वांगचुक हैं, जिन्होंने हिमालयन इंस्टीट्यूट ऑफ़ अल्टरनेटिव यूनिवर्सिटी स्थापित कर इसे साबित कर दिखाया है। उनके यहां के बच्चे अधिक से अधिक समय किसी कौशल को सीखने में बिताते हैं, न कि रटकर।

हमारे देश में शिक्षा के क्षेत्र में दो महत्वपूर्ण समस्याएं हैं। पहला, सार्वजनिक स्कूलों का कम होना और दूसरा, सार्थक यानी क्वालिटी अध्यापकों की कमी। उन गांवों में जहां स्कूल नहीं हैं और जहां अध्यापकों का स्तर भी ठीक नहीं है, वहां सारी पढ़ाई वीडियो के माध्यम से होनी चाहिए। टेक्नोलॉजी का अधिक से अधिक इस्तेमाल शिक्षा के प्रसार और गुणवत्ता को सुधारने में लगाना चाहिए। निजी क्षेत्र की कई कंपनियां वीडियो के माध्यम से बच्चों को प्राइवेट ट्यूशन और कोचिंग देने का काम करती हैं। इनके वीडियो सरस और रुचिकर होते हैं और बच्चे उनसे जल्दी सीखते भी हैं। अब सवाल यह है कि इस तरह के वीडियो यदि ट्यूशन के लिए इस्तेमाल हो सकते हैं तो सीधे पाठ्यक्रम की पढ़ाई के लिए क्यों नहीं? हमारा देश एक जनसंख्या प्रमुख देश है और इसलिए इसके अंदर एक प्रतिभा-प्रमुख देश बनने की असीम संभावनाएं हैं। इन संभावनाओं का सच होना केवल 'सर्वशिक्षा' और उससे भी अधिक 'सही शिक्षा' पर निर्भर है। समय आ गया है कि हम शिक्षा को प्रत्येक बच्चे तक पहुंचाएं। शिक्षा का आम होना किसी समाज के लिए बहुत ही अच्छी बात है, लेकिन जब शिक्षा का लक्ष्य मात्र रोज़गार हासिल करना या पैसा कमाना बन जाए, तो फिर शिक्षा अपने मूल उद्देश्य से भटक जाती है। वर्तमान समय की सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात यही है कि सभी महज़ रोज़गार के लिए शिक्षा हासिल करते हैं।



आज की भौतिकवादी सोच ने बच्चों के जीवन को सबसे ज़्यादा प्रभावित किया है। फलस्वरूप ऐसे निजी स्कूल चलन में आते गए जहां बच्चों को कारोबारी सोच के हवाले कर दिया गया और बच्चे शिक्षा के अस्ल लक्ष्यों से दूर हो गए। यही कारण है कि ज़्यादातर बच्चे आत्मविश्वास खो बैठते हैं और आगे जीवन के मैदान में सफल नहीं हो पाते। जब शिक्षा का लक्ष्य मात्र रोज़ी-रोटी और जीवन के ऐशो-आराम हासिल करना बन जाए, तो वह अपने अस्ल उद्देश्यों को पूरा नहीं कर सकती।

■■

(लेखक 'विवेकानंदा कॉलेज ऑफ़ लॉ' अलीगढ़ में असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हैं)

कविता



पूरन चंद्र जोशी

श्रमजीवी बनकर जियो

जन से विमुख नहीं
जन के बीच रहो
जन से अलग नहीं
जन के साथ रहो

जन की व्यथा सहो
जन के साथ तपो
जन के सुख दुख में
रोओ और हंसो

जन के जीवन का
अज्ञान तमस हरो
जन के जीवन में
ज्ञान का आलोक भरो

यश के लिए नहीं
सेवा के लिए जियो
जो कुछ भी संचय करो
बाँट कर उसे जियो

लोभ पैदा करता सदा
जनहित से अलगाव
भोगी का होता सदा
अपनों से ही दुराव

असाधारण नहीं
साधारण बनकर जियो
स्व मुक्ति हेतु नहीं
जन मुक्ति हेतु जियो

जन की वाणी सुनो
जन भाषा ग्रहण करो
जन से शिक्षा लो
जन को शिक्षित करो

महलों का मोह तजो
वैभव का लोभ तजो
नहीं परजीवी बनो
श्रमजीवी बनकर जियो।

मंथन



जितेंद्र गौतम



भूकंप की त्रासदी और हम

कितने विवश, कितने सजग?

हे मनुष्यो!
अपने पालनहार से डरो, वास्तव में, क़यामत (प्रलय) का भूकम्प बड़ा ही घोर विषय है।जिस दिन, तुम उसे देखोगे, सुध न होगी प्रत्येक दूध पिलाने वाली को अपने दूध पीते शिशु की और गिरा देगी प्रत्येक गर्भवती अपना गर्भ तथा तुम देखोगे लोगों को नशे में,जबकि वे नशे में नहीं होंगे, परन्तु अल्लाह की यातना बहुत कड़ी होगी।
(कुरान:22,1-2)

तुर्किये और सीरिया में रिक्टर पैमाने पर 7.8 की तीव्रता के भूकंप ने भयंकर तबाही मचाई, जान व माल की भारी बर्बादी हुई। तुर्किये में आए भूकंप की एक विशेष बात यह है कि यहां केवल एक भूकंप नहीं आया, बल्कि एक बड़े झटके के बाद सौ से अधिक छोटे-छोटे झटके देखने को मिले जिनकी तीव्रता चार-पांच के आसपास थी। हालांकि कुछ झटके ऐसे भी रहे जिनकी तीव्रता 7.5 से ज़्यादा थी।

जानकारों का कहना है कि भूकंपीय तरंगें पांच से तेरह किलोमीटर प्रति सेकंड की रफ़्तार से गति करती हैं, जबकि प्रकाश की गति तीन लाख किलोमीटर प्रति सेकंड है। दोनों के बीच इसी अंतर का फ़ायदा उठाते हुए हम भूकंप का पूर्वानुमान लगा सकते हैं, लेकिन यह अंतर बहुत ही कम यानी कुछ नैनो सेकेंड का ही होता है। इसका कोई फ़ायदा नहीं, क्योंकि अगर एक सेकंड पहले ये पता चल भी जाए कि भूकंप आने वाला है तो कुछ किया नहीं जा सकता, क्योंकि क्षण मात्र में हज़ारों लोगों तक इसकी सूचना पहुंचाना और उन्हें सुरक्षित जगह भेजना नामुमकिन है।

अभी तक ऐसी कोई भी तकनीक नहीं, जिससे भूकंप आने से पहले लोगों को सचेत किया जा सके। किंतु ऐसा देखा गया है कि भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के पहले जीव-जंतुओं के माध्यम से हमें कुछ संकेत मिलने लगते हैं। शोध में पाया गया है कि पशु-पक्षियों और जलचरों यानी मछलियों और मेंढकों आदि को भूकंप आने का आभास पहले ही हो जाता है। कुत्ते, बिल्ली, हाथी, गाय, भैंस जैसे जानवर भूकंप की तरंगों को महसूस करके बेचैनी से भागने लगते हैं। पक्षियों को भी बेचैनी से आकाश में उड़ते हुए देखा गया है। दरअस्ल, भूकंप की तरंगों को महसूस करने की क्षमता मनुष्यों से अधिक पशु-पक्षियों में पाई जाती है, क्योंकि हम एक ख़ास फ्रिक्वेंसी से ऊपर या नीचे की तरंगों को सुन या महसूस नहीं कर पाते।

उल्लेखनीय है कि नीदरलैंड के सर्वेक्षणकर्ता हूगरबीट्स ने तुर्किये और सीरिया के बारे में भूकंप को लेकर जो भविष्यवाणी की थी, उन्होंने ही भारत के बारे में भी भविष्यवाणी की है। ये दुनिया के पहले शोधकर्ता हैं जो भूकंप की भविष्यवाणी का दावा कर रहे हैं। हालांकि दुनिया के वैज्ञानिकों का कहना है कि उनके दावों के पीछे कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

ग़ौरतलब है कि हूगरबीट्स जो ख़ुद को भूकंपीय शोधकर्ता बताते हैं, सौर प्रणाली भूमिति सूचकांक के सहारे सटीक भविष्यवाणी करने का दावा करते हैं। तुर्कीये और सीरिया के भूकंप को लेकर उनका दावा सच बताया जा रहा है। मगर सवाल है कि क्या भारत के बारे में जो भूकंप आने की भविष्यवाणी उन्होंने की है, उसे तुर्कीये में आए भूकंप की भविष्यवाणी से जोड़ कर देखना चाहिए?

भूकंप पर शोध करने वाले यूनाइटेड स्टेट्स जियोलॉजिकल सर्वे का कहना है कि भूकंप की भविष्यवाणी करने का कोई विश्वसनीय तरीक़ा नहीं है। बावजूद इसके अगर भविष्यवाणी कुछ हद तक भी सही साबित होती है तो हूगरबीट्स की भविष्यवाणी को पूरी तरह ख़ारिज नहीं किया जाना चाहिए।

जानकारों के मुताबिक़, आमतौर पर ज्वालामुखी या धरती के पपड़ी के भीतर गहरे आंदोलन होने या टेक्टोनिक प्लेटों के विस्थापन या आपस में टकराने की वजह से उच्च स्तर के भूकंप आते हैं। भारत-नेपाल में धरती के नीचे ये क्रियाएं तेज़ गति से चलती रहती हैं। यही वजह है कि साल में दर्जनों भूकंप की घटनाएं दर्ज होने लगी हैं। दुनिया के सबसे सक्रिय भूकंपीय इलाक़ों में भारत, तुर्किये, उत्तर अफ़्रीक़ी और दक्षिण अमेरिकी देश शामिल हैं। दिल्ली में छोटे स्तर के भूकंप आते ही रहते हैं, जिसकी वजह धरती के नीचे टेक्टोनिक प्लेटों में कंपन है।

भूविज्ञानियों के मुताबिक़ पूरा भारतीय उपमहाद्वीप धीरे-धीरे भूकंप वाले ख़तरनाक क्षेत्र में आता जा रहा है। भारत का लगभग 59 प्रतिशत हिस्सा

जानकारों का कहना है कि भूकंपीय तरंगें पांच से तेरह किलोमीटर प्रति सेकंड की रफ़्तार से गति करती हैं, जबकि प्रकाश की गति तीन लाख किलोमीटर प्रति सेकंड है। दोनों के बीच इसी अंतर का फ़ायदा उठाते हुए हम भूकंप का पूर्वानुमान लगा सकते हैं, लेकिन यह अंतर बहुत ही कम यानी कुछ नैनो सेकेंड का ही होता है। इसका कोई फ़ायदा नहीं, क्योंकि अगर एक सेकंड पहले ये पता चल भी जाए कि भूकंप आने वाला है तो कुछ किया नहीं जा सकता, क्योंकि क्षण मात्र में हज़ारों लोगों तक इसकी सूचना पहुंचाना और उन्हें सुरक्षित जगह भेजना नामुमकिन है।



अलग-अलग तीव्रता के भूकंपों के लिए संवेदनशील है। दिल्ली, मुंबई, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पश्चिमी गुजरात, उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश के पहाड़ी इलाक़े और बिहार-नेपाल सीमा के इलाक़े में भूकंप का ख़तरा बना रहता है। गुजरात का कच्छ का इलाक़ा, उत्तरांचल और पूर्वोत्तर के ज़्यादातर राज्य ऐसे हैं जहां भूकंप का ख़तरा सबसे ज़्यादा माना जाता है।

नेशनल सेंटर फॉर सिस्मोलॉजी के अनुसार, साल 2022 में भारत में नौ सौ से अधिक भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। इनमें कुछ भूकंपों की तीव्रता चार से कम थी। इसलिए कम तीव्रता के कारण लोगों को इनका पता नहीं चला। आठ से अधिक तीव्रता वाला भूकंप बहुत अधिक विनाशकारी होता है।

अक्सर देखा गया है कि जहां इमारतें ठीक तरह से नहीं बनी होतीं, वहां भूकंप के दौरान ज़्यादा मौतें होती हैं। भूकंप इसलिए ज़्यादा विनाशकारी साबित होता है कि ज़्यादातर भवन अवैज्ञानिक ढंग से बनाए जाते हैं। जो मानक भूकंपरोधी भवन बनाने के तय किए गए हैं, उसका पालन न तो निजी तौर पर घर बनाते वक़्त आम लोग करते हैं और न भवन निर्माता। देखा गया है कि बहुत कम तीव्रता के भूकंप आने पर भी इमारतें हिलने लगती हैं और उनमें दरारें पड़ जाती हैं। इसलिए भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं में अधिक नुक़सान से बचने के लिए रिहाइशी इमारतों की गुणवत्ता पर ध्यान देना होगा।

वर्तमान समय में शहरी आबादी बढ़ती जा रही है और भूकंप जैसी आपदाओं से मौत का ख़तरा भी बढ़ रहा है। ऐसे में सुरक्षित इमारतें बनाना बहुत ज़रूरी हो गया है। यदि कड़े परीक्षण और बेहतर डिज़ाइन से इमारतों को



निर्मित किया जाए तो ये बहुत हद तक भूकंपरोधी साबित होंगी।

जानकारों का मानना है कि अगर भूकंप के प्रति जनसामान्य में बेहतर तैयारी और सजगता हो तो भूकंप से नुक़सान नाममात्र का ही होगा। दिल्ली के आसपास और देश का पश्चिम-उत्तर क्षेत्र भूकंप की दृष्टि से अतिसंवेनशील क्षेत्र माना जाता है। कब उच्च स्केल का भूकंप आ जाए, कहना मुश्किल है। भूवैज्ञानिक भूकंप से बचने के लिए आम आदमी में सजगता बढ़ाने पर ज़ोर देते रहे हैं। इसलिए हर वक़्त, हर उम्र और हर वर्ग के लोगों में सजगता और संवेदनशीलता की ज़रूरत है। आज सोशल मीडिया, टीवी चैनलों और अख़बारों के ज़रिये से भी आम लोगों के जान-माल को भूकंप से बचने के लिए सतर्क और सजग किया जा सकता है। यह सोच बनाना ठीक नहीं कि प्राकृतिक आपदाओं के संबंध में इंसान के हाथ में कुछ भी नहीं है, प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए सजगता और छद्म अभ्यास बचाव के बेहतर उपाय साबित हो सकते हैं।

भूकंप से बचने की बेहतर तैयारी पूरी मुस्तैदी के साथ करने की ज़रूरत है। इससे भूकंप के प्रति हमारी लापरवाही ख़त्म होगी और ख़तरनाक पैमाने पर भूकंप आने पर भी काफ़ी जान-माल की रक्षा हो पाएगी। भविष्य में भूकंप से होने वाले विनाश को रोकने के लिए भूकंप की पूर्व चेतावनी देने वाली तकनीक विकसित करने के साथ-साथ इससे होने वाले नुक़सान को कम करने के तरीक़े भी हमें खोजने होंगे। ■■



गौरक्षा और मांसाहार

दृष्टिकोण



अहसन फ़िरोज़ाबादी

हिन्दू धर्म-ग्रंथों में मांसाहार व्यवस्था का उल्लेख यदाकदा ही नहीं अपितु विभिन्न स्थानों पर मिलता है, परंतु अपना राजनीतिक हित साधने हेतु गौरक्षा के नाम पर देश को सांप्रदायिक आग में धकेलने वाले चाहते हैं कि ऐसा माहौल व्याप्त रहे ताकि इंसानियत के ख़ून से इनकी राज गद्दियां सजी रहें। अगर हिन्दू धर्म गुरु भी चाहें तो बता सकते हैं कि स्वयं उनके ही धार्मिक ग्रंथों में गौमांस के सेवन का वर्णन मिलता है। मैं हिन्दू धर्म ग्रंथों से गौमांस सेवन के समर्थन के बहुत से उदाहरण प्रस्तुत कर सकता हूं, परंतु इस समय इस बात से ज़्यादा गौरक्षा के नाम पर क़ानून व्यवस्था की समस्या का सवाल ज़्यादा अहम है।

मूल समस्याओं की बजाए गौरक्षा का मामला सबसे अधिक उछाला गया। हमें तथ्यों एवं शोधों के आधार पर इसकी हक़ीक़त को जानने का प्रयास करना चाहिए। कुछ सांप्रदायिक सोच वाले राजनेताओं ने गाय को हिंदुओं की सामुदायिक पहचान का प्रतीक बना दिया है और सांप्रदायिक मानसिकता वालों ने हिंदू समाज के बीच में यह अवधारणा बिल्कुल आम कर दी है कि गाय खाने वाले मुसलमानों से हिंदुओं की सांस्कृतिक परंपरा के लिए ख़तरा व्याप्त हो गया है, हालांकि मुस्लिम समुदाय इसकी गंभीरता को समझता है और इस तरह के कार्यों से दूर रहता है, परंतु फिर भी उसे हिन्दू कट्टरपंथियों द्वारा आये दिन अत्याचार का निशाना बनाया जाता है।

लंबे समय से गाय शासकों के हाथों का एक राजनीतिक उपकरण बनी रही। लिहाज़ा ब्राह्मणों की भावनाओं तथा गाय के प्रति उनकी श्रद्धा का विचार करके मुग़ल शहंशाह बाबर, अकबर, जहांगीर तथा औरंगज़ेब ने गौ-हत्या पर सीमित रूप से पाबंदी लगा दी थी, लेकिन आगे चलकर जब संगठित हिंदू गौ-रक्षा आंदोलन में गाय को विभिन्न विचारधाराओं के लोगों की एकता का प्रतीक बना दिया तब तो यह पशु सार्वजनिक राजनीतिक लामबंदी का

एक उपकरण बन गया! इन सारी बहसों के बीच कहीं भी यह बात सामने नहीं आई कि आख़िर उन लोगों के ख़िलाफ़ क्या कार्यवाही की जानी चाहिए जो जगह-जगह भीड़तंत्र की शक्ल में आकर बेगुनाहों का क़त्लेआम कर रहे हैं।

देश के कई राज्यों में बीफ़ को बैन किया गया। वास्तविकता यह है कि इस समय भाजपा शासनकाल में भारत दुनिया का पांचवें नंबर का मांस निर्यातक देश है, वहीं बीफ़ निर्यात के मामले में तो हम दुनिया में ब्राजील के साथ पहले स्थान पर हैं। सबसे ज़्यादा बीफ़ निर्यातक राज्य उत्तर प्रदेश है, जहां के मुखिया योगी आदित्यनाथ गाय के नाम पर किस तरह राजनीति करते हैं यह किसी से छिपा नहीं है।

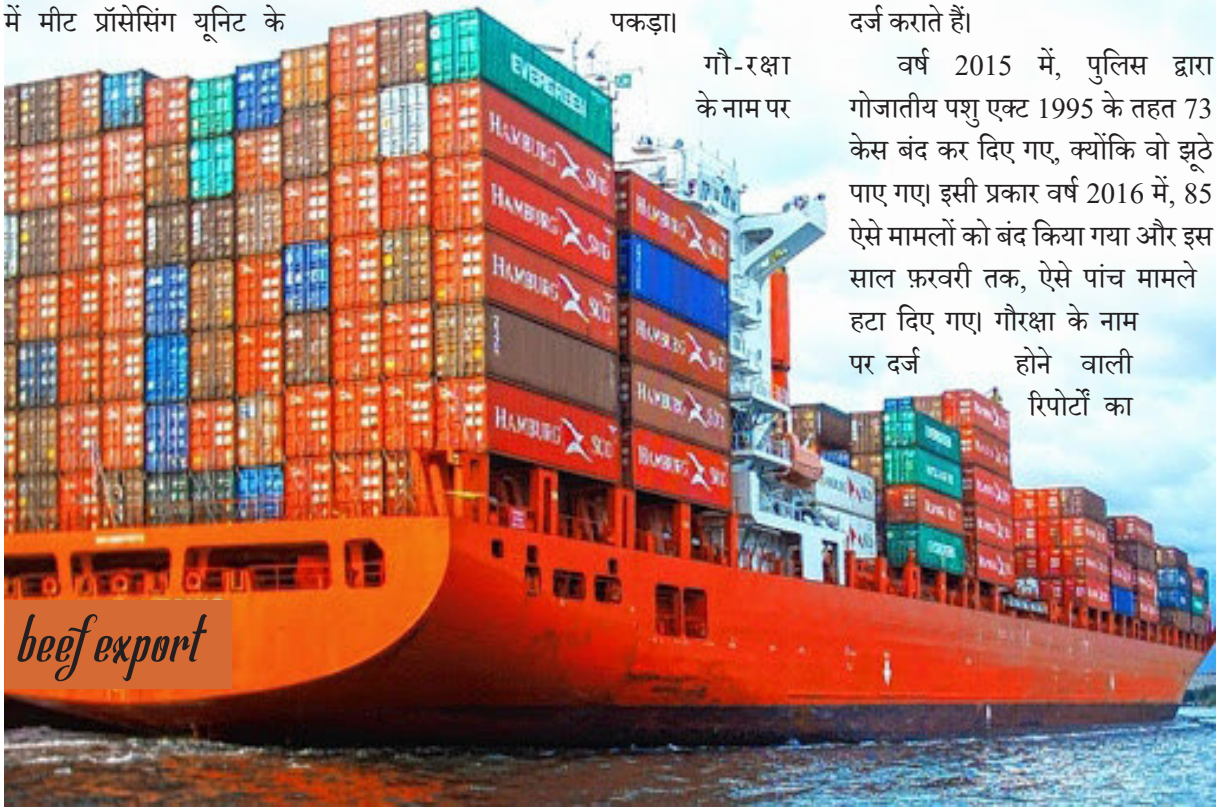
अंग्रेज़ी अख़बार हिंदुस्तान टाइम्स ने अपनी रिपोर्ट में दावा किया था कि भाजपा विधायक संगीत सोम और दो अन्य लोगों ने अलीगढ़ में वर्ष 2009 में मीट प्रॉसेसिंग यूनिट के लिए ज़मीन ख़रीदी थी। संगीत सोम वही विधायक हैं, जो दादरी मामले में गिरफ़्तार आरोपियों के परिवार की मदद के लिए आगे आए थे। उन्होंने अख़लाक़ के परिवार को गाय काटने वाला क़रार दिया था। 28 सितंबर 2015 को उत्तर प्रदेश के दादरी में बीफ़ खाने की अफ़वाह फैलने के बाद मुहम्मद अख़लाक़ की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई थी।

पानीपत शहर में मांस व्यापारी पप्पू भाजपा की झंडी लगी गाड़ी पकड़ी गयी तब पता चला कि वह अवैध मांस कारोबारी हैं। वहीं हरियाणा, छत्तीसगढ़, कटनी आदि जगहों पर गौ-तस्करी करते हुए भाजपा नेता पकड़े गए, मगर इन मामलों को मीडिया में दबा दिया गया। इसी प्रकार 28 जनवरी 2021 में बालाघाट पुलिस ने भारतीय जनता युवा मोर्चा के 20 लोगों को गायों और बैलों की तस्करी के जुर्म में रंगे हाथों पकड़ा।

गौ-रक्षा के नाम पर जारी हिंसक वारदातों का विश्लेषण करने से पता चलता है कि बीते 8 वर्षों में गाय से जुड़ी जितनी भी घटनाएं हुई हैं, उनमें से 45 फ़ीसदी तो अकेले वर्ष 2017 में ही हुईं। गौ-रक्षा के नाम पर होने वाली वारदातों में से 97 फ़ीसदी केंद्र में मोदी सरकार बनने के बाद हुई हैं। इन हिंसक वारदातों को अंजाम देने वाले ज़्यादातर आरोपी हिंदुत्ववादी दक्षिणपंथी संगठनों से जुड़े हैं।

गौ-रक्षा का एक दूसरा रूप-जबरन वसूली रैकेट के रूप में भी सामने आ रहा है। एक सामाजिक कार्यकर्ता नूर मुहम्मद, जो हरियाणा के मेवात क्षेत्र में काम करते हैं, का कहना है कि यह एक व्यवसाय बन गया है। उन्होंने बताया कि गौ-रक्षकों को पैसा चाहिए, अगर आप उन्हें भुगतान करते हैं, तो वे आपको जाने देते हैं अन्यथा वे आप से मवेशी या धनराशि छीनते हैं और गायों की तस्करी के ख़िलाफ़ पुलिस में शिकायत दर्ज कराते हैं।

वर्ष 2015 में, पुलिस द्वारा गोजातीय पशु एक्ट 1995 के तहत 73 केस बंद कर दिए गए, क्योंकि वो झूठे पाए गए। इसी प्रकार वर्ष 2016 में, 85 ऐसे मामलों को बंद किया गया और इस साल फ़रवरी तक, ऐसे पांच मामले हटा दिए गए। गौरक्षा के नाम पर दर्ज होने वाली रिपोर्टों का





देश के कई राज्यों में बीफ़ को बैन किया गया। वास्तविकता यह है कि इस समय भाजपा शासनकाल में भारत दुनिया का पांचवें नंबर का मांस निर्यातक देश है।

विश्लेषण करने पर यह बात स्पष्ट रूप से साबित होती है कि गौ-तस्करी की रिपोर्टों में कोई वास्तविकता नहीं है।

लगभग आठ वर्ष पहले जब कुछ दक्षिणपंथियों ने दादरी के मुहम्मद अख़लाक़ को इस संदेह पर मौत के घाट उतार दिया था कि उन्होंने एक गाय की हत्या कर दी थी। तब प्रधानमंत्री मोदी ने अंततः गौ-रक्षा पर अपनी चुप्पी तोड़ी थी, मगर हमारे प्रधान सेवक केवल इतना ही बोल सके कि....''जिस तरह से कुछ लोगों ने गाय सुरक्षा के नाम पर दुकानों को खोल दिया है, उस पर मुझे बहुत ग़ुस्सा आता है।''

ग़ुस्सा आने की बात करने वाले हमारे प्रधान सेवक अख़लाक़ की हत्या से लेकर हालिया घटना नासिर और जुनैद के बेरहम हत्यारों पर अभी तक कोई ग़ुस्सा नहीं उतार सके। ■■

(लेखक वेलफेयर पार्टी ऑफ़ इंडिया के कन्वीनर हैं)

"ऐ ईमान वालो बचाओ अपने आपको और अपने अहलो अयाल को दोजख़ की आग से।" (कुरआन)
अल्लाह के रसूल ने फरमाया : "मॉ–बाप का बेहतरीन तोहफा अपने बच्चों की सही तालीम व तर्बीयत है।" (हदीस)

अल्लाह की बंदगी और अपने अहलो अयाल(परिवार) व बंदों के हक़ के सिलसिले में अपनी ज़िम्मेदारियों को पहचानने(समझने) के लिए कुरआन व हदीस, सीरत (नबी सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की मुबारक ज़िंदगी), इस्लामी तारीख़(इतिहास) व हिन्दुस्तान के मशहूर दीनी–इल्मी, फ़िक्री और म्यारी अख़बार व रसाइल (पत्रिकाओं) का मुताला (अध्ययन) कीजिए।

इस सिलसिले में हमारी ख़िदमात हासिल कीजिए :

कुरआन मजीद – अरबी, मय तर्जुमा, तफसीर, हदीस, सीरतुन्नबी, सीरते सहाबा व सहाबियात, तारीख़े इस्लाम, बच्चों के लिए तर्बीयती किताबें, दावती लिट्रेचर, उर्दू–हिन्दी डिक्शनरी, पारा पेटी, रहल जायनमाज़ वगैरह ...

आर्डर पर हासिल करें।

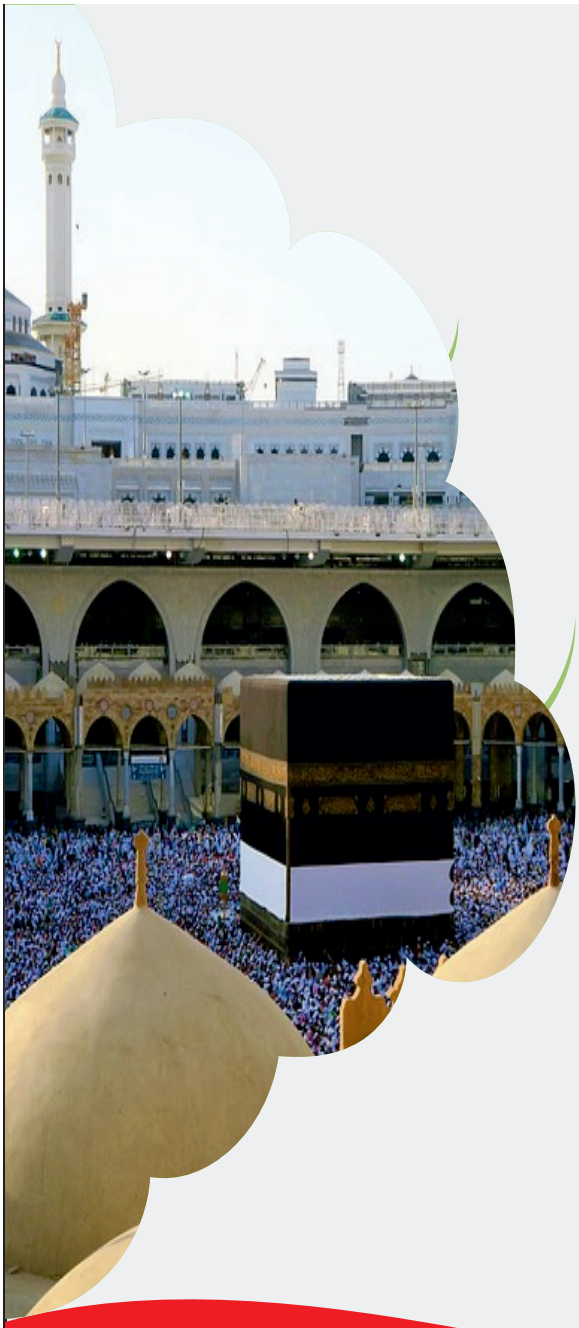
पेपर – पत्रिका	प्रति कापी	सालाना खरीददारी
✪ कान्ति साप्ताहिक अख़बार	7/-	350/-
✪ कान्ति मासिक पत्रिका	30/-	350/-
✪ दावत उर्दू अख़बार साप्ताहिक	15/-	750/-
✪ जिंदगी–ए–नौ उर्दू महाना	35/-	420/-

सालाना खरीददारी व ग्राहक बनने के लिए राब्ता करें :

AL FALAH
True Success Both Worlds

अल फलाह True Success Both Worlds
मेन रोड तलापार, राधावल्लभ वार्ड, करेली जिला–नरसिंहपुर(म.प्र.)

प्रो. अख़्तर नवाब
✆ 9926408118



"जिन लोगों ने इन्कार किया
और अल्लाह के रास्ते से
रोका, अल्लाह ने उनके कर्मों
को अकारथ कर दिया, और
जो लोग ईमान लाए और
जिन्होंने अच्छे कर्म किए और
उस चीज़ को मान लिया जो
मुहम्मद पर अवतरित हुई है-
और है वह सर्वथा सत्य उनके
रब की ओर से-अल्लाह ने
उनकी बुराइयां उनसे दूर कर
दीं और उनका हाल ठीक
कर दिया।"
(क़ुरआन, 47:1-2)

with best compliment from
Dr. Anwar Siddique
Nagpur [MS]



रोज़ों का आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक महत्व

सम्पूर्ण समर्पण का प्रशिक्षण शिविर

विशेष-आयोजन

मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी

नैतिकता इंसान की बहुमूल्य संपत्ति (asset) है। ईश्वर ने इसी लिए इंसानों की मूल-प्रकृति (instinct) में सारे नैतिक मूल्य सृजित कर दिए और उन्हें इस स्वभाव पर पैदा किया कि 'करने के कामों' (Do's) और 'न करने के कामों' (Don'ts) की समझ तथा इच्छा-शक्ति उनकी प्राथमिकता बना दी।

रोज़ा इस्लाम के पांच मूल-स्तंभों में से एक है। जो इसकी अनिवार्यता को नकार दे, वह इस्लाम से स्वतः निष्कासित हो जाता है। भोर से संध्या तक 'अन्न, जल, यौन क्रिया' छोड़े रहना इतना महत्वपूर्ण कैसे हो गया कि इस्लाम पर "बरक़रार रहना" इस "छोड़े रहने" पर आश्रित हो जाए? इस प्रश्न का सादा-सा जवाब यह है कि प्रत्यक्षतः खान-पान एवं यौन-क्रिया को तज देने की यह प्रक्रिया इंसान के व्यक्तित्व से लेकर संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था को सुधारने और मज़बूत बुनियादों पर निर्मित करने का एक अद्भुत ईश्वरीय प्रयोजन है। यह हर ग्यारह महीने बाद क्रियाशील होता है और एक महीने की तपस्या से हर व्यक्ति को गुज़ारकर अगले ग्यारह महीनों तक उत्तम नैतिक आधारों पर समाज को बनाने और चलाने का प्रावधान कर जाता है। इस्लाम में रोज़े का इतना महत्वपूर्ण स्थान इसलिए है कि यह एक ही समय में व्यक्ति एवं समाज को, ईश्वर के आज्ञापालन द्वारा उससे संबंध घनिष्ठ, लाभदायक एवं हितकारी बना देता है।

रोज़े की वास्तविकता

रोज़ा आध्यात्मिक, नैतिक तथा सामाजिक स्तर पर महत्वपूर्ण कैसे है, यह जानने के लिए संक्षेप में रोज़ों की वास्तविकता को समझ लेना सहायक होगा। 'रोज़ा' के लिए इस्लाम के मूल ईश-ग्रंथ क़ुरआन में 'सौम' शब्द प्रयुक्त हुआ है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'रुक जाना' और पारिभाषिक अर्थ है ईश्वर की अवज्ञा (नाफ़रमानी), जैसे बुराई, बदी, झूठ, धोखा, परनिंदा, अपशब्द, अत्याचार, निर्लज्जता, हराम कार्य, व्यभिचार, लांछन आदि दोषों एवं

दुष्कर्मों से रुक जाना। क़ुरआन (2:183) में रोज़े को अनिवार्य करते हुए इसका मूल-ध्येय 'तक़वा' बताया गया है। 'तक़वा' का शाब्दिक अर्थ है 'बचना' (संयम और आत्म-नियंत्रण); और इसका पारिभाषिक अर्थ है : उपर्युक्त दोषों एवं दुष्कर्मों से बचना। इसके लिए रोज़ों का एक महीना ईश्वरीय प्रावधान से व्यक्ति एवं समाज के लिए संयम एवं आत्म-नियंत्रण का 'प्रशिक्षण मास' बनाया गया है।

रोज़े का आध्यात्मिक महत्व

सारे जीवधारियों में 'शरीर' और 'प्राण', दो मूल तत्व होते हैं, परन्तु मनुष्य में एक तीसरा तत्व 'आत्मा' का भी होता है, जो मनुष्य को सारे जीवधारियों से उत्तम, उत्कृष्ट एवं श्रेष्ठ बनाता है। शरीर और आत्मा का धारक इंसान उत्तम तथा लाभकारी उसी वक़्त बन सकता है जब उसके आध्यात्मिक विकास और दृढ़ता के प्रावधान को उसकी शारीरिक आवश्यकताएं पूरी होने के प्रावधान से अधिक महत्व प्राप्त हो। आध्यात्मिकता का उद्गम, स्रोत और केंद्र 'ईश्वर' है। इंसान और समाज जितना अधिक ईशपरायण होगा, ईश-संवेदनशीलता तथा ईश-चेतना उसमें जितनी ज़्यादा तथा सक्रिय होगी, मनुष्य का चरित्र उतना ही श्रेष्ठ होगा और ऐसे मनुष्यों से बना समाज उतना ही शान्तिमय, न्यायपूर्ण एवं परोपकारी होगा। रोज़े की अद्भुत प्रभावशीलता ऐसे इंसान और समाज बनाने में अति सहायक होती है।

आध्यात्मिकता का उद्गम, स्रोत और केंद्र 'ईश्वर' है। इंसान और समाज जितना अधिक ईशपरायण होगा, ईश-संवेदनशीलता तथा ईश-चेतना उसमें जितनी ज़्यादा तथा सक्रिय होगी, मनुष्य का चरित्र उतना ही श्रेष्ठ होगा और ऐसे मनुष्यों से बना समाज उतना ही शान्तिमय, न्यायपूर्ण एवं परोपकारी होगा। रोज़े की अद्भुत प्रभावशीलता ऐसे इंसान और समाज बनाने में अति सहायक होती है।

ईश्वर से घनिष्ठ संबंध इंसान के व्यक्तित्व के आध्यात्मिक पहलू का प्रारूपण, संचालन, विकास तथा क्रियान्वयन करता है। रोज़ेदार इंसान हर क्षण मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से जागृत एवं सजग रहता है कि ईश्वर उसे देख रहा है। प्यास से बदहाल हो तब भी कुल्ली करते समय एक घूंट.....बल्कि एक बूंद भी.....पानी कंठ से नीचे उतरने न देने का आत्मिक बल ईश्वर से आध्यात्मिक संबंध मज़बूत करने में सफल बना देता है। कोई भी देख न रहा हो, किसी को भी मालूम न होने पाए और रोज़ेदार एकांत में खाना-पानी ले सकता है; पति-पत्नी यौन-संबंध से आनंदित हो सकते हैं, लेकिन फिर भी मात्र इस कारण से रुके रहते हैं



कि ईश्वर ने रुके रहने का आदेश दिया है। ऐसे क्षण बार-बार आते हैं और ईश-चेतना एवं ईशपरायणता की पराकाष्ठा तक रोज़े को पहुंचाते रहते हैं। खाना, पीना और यौन-क्रिया, ईश्वर की सृष्टि-योजना का मूल तथा अभाज्य अंग है, वैध, हलाल तथा अभीष्ट हैं। इन्हें भी रोज़े की हालत में अवैध, हराम, वर्जित करके ईश्वर इंसान में यह प्रेरणा उत्पन्न कर देता है कि ईश्वर का आदेश होने पर हलाल चीज़ें (भोजन-पानी) और हलाल काम (यौन-क्रिया) भी हमने छोड़ दिया तो जिन ग़लत, बुरे क्रिया-कलापों और चीज़ों से उसने रोक दिया है, उन्हें छोड़ देना तो हमारे लिए बहुत आसान है।

रमज़ान के महीने में अधिक से अधिक इबादत, क़ुरआन पाठ; मन-मस्तिष्क, भावनाओं, इच्छाओं पर नियंत्रण, ईशाज्ञापालन में तत्परता, ईश्वर की प्रसन्नता अर्जित करने, मृत्यु-पश्चात स्वर्ग प्राप्त करने की ललक तथा हर क्षण सत्यनिष्ठा का लगातार प्रशिक्षण इंसान तथा समाज के आध्यात्मिक स्तर को निरंतर विकसित करता रहता है, जिसका लाभ व्यक्ति तथा समाज अगले ग्यारह महीनों तक उठाता रहता है।

रोज़े का नैतिक महत्व

नैतिकता इंसान की बहुमूल्य संपत्ति (asset) है। ईश्वर ने इसी लिए इंसानों की मूल-प्रकृति (instinct) में सारे नैतिक मूल्य सृजित कर दिए और उन्हें इस स्वभाव पर पैदा किया कि 'करने के कामों' (Do's) और 'न करने के कामों' (Don'ts) की समझ तथा इच्छा-शक्ति उनकी प्राथमिकता बना दी। जिन कामों में नैतिक गुण हैं (जैसे सच बोलना, परोपकार, न्याय-प्रियता, पर-सेवा भाव, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, अमानतदारी आदि) उनके प्रति तत्परता और जिन कामों में नैतिक दोष हैं (जैसे झूठ, धोखा, अन्याय, अत्याचार, चोरी, व्यभिचार, अश्लीलता, क्रूरता, शोषण आदि) उनके प्रति दूरी एवं परिहार (avoidance) बरतना मानव-स्वभाव का अंग बना दिया।

लेकिन कुछ आंतरिक और कुछ बाह्य कारकों से मूल नैतिक गुणों में ह्रास एवं विघटन होने लगता है। इंसान की इच्छा-शक्ति इस विघटन को रोक नहीं पाती तथा उसका मनोबल बुराई की तीव्र गति के समक्ष ठहर नहीं पाता। तब फिर ऐसा विकार उत्पन्न होता है जो नैतिक गुणों को ऐसे खा जाता है जैसे ज़ंग, लोहे को। ऐसी स्थिति के लिए विशुद्ध ईश्वरीय धर्म ने अनेक प्रावधान किए हैं, उनमें से एक 'रोज़ा' है। यह don'ts से रुकने और do's को करने का, एक मास का प्रचुर प्रशिक्षण कार्यक्रम है।

कुरआन (2:183) में रोज़े को अनिवार्य करते हुए इसका मूल-ध्येय 'तक़वा' बताया गया है। 'तक़वा' का शाब्दिक अर्थ है 'बचना' (संयम और आत्म-नियंत्रण) ; और इसका पारिभाषिक अर्थ है : दोषों एवं दुष्कर्मों से बचना। इसके लिए रोज़ों का एक महीना ईश्वरीय प्रावधान से व्यक्ति एवं समाज के लिए संयम एवं आत्म-नियंत्रण का 'प्रशिक्षण मास' बनाया गया है।

इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) का एक प्रसिद्ध आदेश है : 'किसी व्यक्ति ने रोज़ा रखकर भी झूठ और बुरा बोलने से स्वयं को न रोका तो अल्लाह को इससे कोई दिलचस्पी नहीं कि वह भूखा-प्यासा रहा।' (भावार्थ)।। इस संक्षिप्त-सी शिक्षा में 'झूठ बोलना' प्रतीकात्मक शैली में कहा गया है। इसका वास्तविक अभिप्राय हर वह ग़लत बात या काम या आचरण है जिसे मूल नैतिक मूल्य के तौर पर इंसान की मूल-प्रकृति नापसंद करती है और विशेषतः सत्य धर्म की शिक्षाओं एवं आदेशों में ईश्वर ने जिससे 'रुक जाने' (अर्थात् 'सौम', रोज़ा), तथा 'बचने' (अर्थात् 'तक़वा'...रोज़े का अस्ल मक़सद) को कहा है। इस तरह ज़रा-सी गहराई में उतर कर देखने और विचार करने से बात सरल रूप में समझ में आ जाती है कि ईश्वर अपने बन्दों से अत्यधिक प्रेम करने के बावजूद उन्हें 29-30 दिनों तक भूख-प्यास से गुज़ारकर वास्तव में उनके नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान का प्रयास करता है।

रोज़े का सामाजिक महत्व

इस्लाम की तीन अन्य इबादतों (मूल स्तंभों)...नमाज़, ज़कात, हज... की तरह रोज़े की अनिवार्य इबादत का आध्यात्मिक एवं नैतिक महत्व के साथ-साथ सामाजिक महत्व भी बहुत है। रोज़े के ज़रिए से इंसान में जो अनेकानेक

कुछ आंतरिक कारणों और कुछ बाह्य कारकों से मूल नैतिक गुणों में ह्रास एवं विघटन होने लगता है। इंसान की इच्छा-शक्ति इस विघटन को रोक नहीं पाती तथा उसका मनोबल बुराई की तीव्र गति के समक्ष ठहर नहीं पाता। तब फिर ऐसा विकार उत्पन्न होता है जो नैतिक गुणों को ऐसे खा जाता है जैसे ज़ंग, लोहे को। ऐसी स्थिति के लिए विशुद्ध ईश्वरीय धर्म ने अनेक प्रावधान किए हैं, उनमें से एक 'रोज़ा' है। यह don'ts से रुकने और do's को करने का, एक मास का प्रचुर प्रशिक्षण कार्यक्रम है।

आध्यात्मिक एवं नैतिक गुण उत्पन्न होते हैं, वे उत्तम एवं आदर्श समाज के निर्माण तथा सामाजिक दोषों एवं दुर्गुणों के सुधार में अपनी भूमिका परोक्षतः तो निभाते ही हैं, प्रत्यक्ष रूप से भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है, उदाहरणार्थ-

• ख़ुद रोज़ा रखते हुए समाज के लोखों ग़रीब परिवारों के करोड़ों सदस्यों से जुड़ने और उनके प्रति योगदान, सहयोग एवं सहानुभूति के परमार्थ कामों में मुस्लिम समाज एक माह तक व्यस्त रहता है।

• बीमार रहने के कारण रोज़ा न रखने वालों को एक दिन के प्रतिदान में समाज के ग़रीब लोगों को एक दिन दो समय का (तीस दिन रोज़ा छूटे तो तीसों दिन) खाना खिलाने का आदेश है। इस प्रकार समाज में स्वार्थ के दायरे से बाहर निकलने एवं परमार्थ एवं परहित में अग्रसर होने की परम्परा बनती है।



• कोई व्यक्ति बुरा-भला कहने, अपशब्द बोलने, लड़ाई-झगड़ा करने पर आ जाए तो आदेश है कि प्रतिक्रिया में क्रोधित एवं उद्वेलित न हुआ जाए, बल्कि यह कहकर बात टाल दी जाए और वहां से हट जाया जाए कि 'भाई! मैं रोज़े से हूं।'

• तीस दिन तक रोज़ा रखने की स्थिति में ज़बान से, आंख से, कान से कुछ ग़लत, अनुचित, बुरी बातें बोलने, देखने, सुनने की छोटी-मोटी ग़लतियां हो ही जाती हैं। इसके प्रायश्चित को भी इस्लामी शरीअत ने समाज के निर्धन एवं वंचित लोगों के हितार्थ काम से जोड़ दिया है। आदेश है कि हर व्यक्ति रोज़े ख़त्म होने और ईद की नमाज़ पढ़ने से पहले शरीअत द्वारा निर्धारित मात्रा में धन/सामग्री से ग़रीबों को दान दे ताकि वे भी अच्छी तरह ईद की ख़ुशियां मना सकें। यह न किया तो चेतावनी दी गई है कि तीस दिन के रोज़ों की तपस्या ईश्वर तक न पहुंचेगी, अधर में लटकी रहेगी।

• समाज में यौन-अनाचार, चरित्रहीनता एवं व्यभिचार फैलने की प्रवृत्ति पर रोज़ों के माध्यम से स्वाभाविक रूप से रोक लगाने में सफलता मिलती है। वासना, कामेच्छा, यौन-उत्तेजना को नियंत्रण में रखने का ऐसा प्रभावी, एक-मासीय प्रशिक्षण दिया जाता है कि रोज़ा रखते हुए पति-पत्नी भी यौन-क्रिया से दूर रहते हुए संयम एवं आत्म-नियंत्रण अर्जित कर लेते हैं।

उपरोक्त दो उप-विषयों के अन्तर्गत आध्यात्मिक एवं नैतिक स्तर पर रोज़े इंसान में जो गुण उत्पन्न करते हैं उनका एक अच्छा, सभ्य, शालीन, शांतिपूर्ण, हितकारी एवं परोपकारी समाज बनाने तथा समाज से बुराइयां दूर करने में काफ़ी योगदान होता है। ■■



"बराबरी" का सही अर्थ है

नारीत्व की स्वीकृति

महिला जगत



रहमतुन्निसा

यह सही है कि महिलाओं को शिक्षा, करियर राजनीति के मैदान में पहले से बेहतर मौक़े मिले। दुनिया के कई हिस्सों में विभिन्न आन्दोलनों की बदौलत महिलाओं के अधिकारों को लेकर जागरूकता पैदा हुई। महिलाधिकार आंदोलनों के प्रयासों का सम्मान करते हुए हम यह कह सकते हैं कि वे लोगों में यह जागरूकता पैदा करने में सफल हुए कि महिलाओं की मौजूदा हालत बहुत ही दयनीय है। शुरू में उसने महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक हालात को बेहतर बनाने में किसी हद तक मदद की, लेकिन यदि हम वास्तविकता का गहराई से विश्लेषण करें तो ये आन्दोलन केवल नारों और विरोध प्रदर्शनों का प्रतीक बनकर रह जाते हैं, जिससे दुनिया-भर में महिलाओं के जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

जिन समाजों में हालात बेहतर हो चुके हैं, वहां महिलाएं समान अवसर और स्वीकृति हासिल करने और स्वयं को पुरुषों के बराबर साबित करने के लिए संकटों और संघर्षों का दोहरा बोझ उठा रही हैं। उन्हें अक्सर पुरुषों से ज़्यादा ऊंची आवाज़ में बोलना पड़ता है, ताकि उन्हें सुना जाए। बैंकिंग सेक्टर की एक महिला मैनेजर जो बहुत ऊंची आवाज़ में बोलती हैं-बताया कि उन्हें अपने दफ़्तर में ऊंची आवाज़ में बोलने की आदत हो गई है ताकि पुरुष साथी उसे स्वीकार कर लें।

जब एक सीनियर पुरुष अफ़सर अपनी कार में पिछली सीट पर बैठकर ड्राईवर के साथ आराम से सफ़र करता

है, तो उसे हैसियत और सम्मान की बात समझी जाती है, लेकिन उसी स्तर की कोई महिला यदि वही काम करती है तो लोग पूछते हैं, क्या आपको ड्राइविंग नहीं आती? फिर, आप किस बराबरी की बात कर रहे हैं?

सशक्त बनाने और बराबरी के नाम पर महिलाओं को जानकारी दिए बिना ही उन्हें अतिरिक्त ज़िम्मेदारियों की ओर धकेला जा रहा है। पेशावराना मैदान में महिला की मामूली-सी ग़लती भी आम हो जाती है और लोग टिप्पणियां करने लगते हैं कि ऐसा इसलिए होता है कि वह महिला है। लोग महिला कमज़ोरियों



पर ग़लत रिमार्क करने लगते हैं। नतीजा यह निकलता है कि किसी भी सार्वजनिक जगह चाहे वो करियर हो, राजनीति हो या सामाजिक और धार्मिक संगठनों का नेतृत्व, एक महिला को ख़ुद को योग्य ठहराने के लिए उस क्षेत्र में अपने आपको पुरुष से बेहतर साबित करना पड़ता है।

वह समाज जो अपनी महिलाओं के लिए बराबरी का दावा करता है, यदि अच्छी तरह से अवलोकन किया जाए तो हम पाएंगे कि महिलाओं ने दबाव झेल कर कठिनाइयों और संघर्षों को मद्देनज़र रखते हुए कुछ हासिल नहीं किया, जो उन्हें समाज में ख़ुद बराबर की हैसियत स्वीकार करवाने के लिए देनी पड़ती हैं। प्राचीन समाजों ने बेबुनियाद धारणाओं और रीति-रिवाजों के आधार पर महिलाओं को दबाया और यह मान लिया गया कि उन्हें ग़ुलामों की तरह ज़िंदगी गुज़ारने, हर तरह के ज़ुल्म सहने और सिर्फ़ मर्दों के आनंद के लिए बनाया गया है। उनके साथ केवल बाज़ार के सामान की तरह सुलूक किया गया, लेकिन आधुनिक समाज "बराबरी" के अपने नारों के ज़रिये महिलाओं को वही नुक़सान या उससे भी ज़्यादा नुक़सान पहुंचाते हैं।

महिला के शरीर को अब भी एक वस्तु समझा जाता है और उसकी क़ीमत कॉरपोरेट दुनिया के तय किए पैमाने पर तय होती है। वे फ़ैसला करते हैं कि महिला को कैसे चलना चाहिए, वह कितना खा सकती है, उसका रंग, क़द, वज़न आदि क्या होना चाहिए। स्वतंत्र एवं आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा नहीं दिया जाता।

'बराबरी' की व्याख्या जिस तरह की गई है दरअस्ल, समस्या उसी में है। ज़्यादातर प्रगतिवादी महिलाओं के लिए बराबरी का मतलब एक जैसा होना है। यानी सोचना, पहनावा, चलना, बालों का स्टाइल, नौकरी, खाना सब कुछ पुरुषों जैसा होना चाहिए। इसका नतीजा यह निकला कि लड़की या औरत हमेशा मर्दों के मुक़ाबले में रहती है और यह

बहुत से लोगों का विचार है कि नारीत्व जैसी कोई चीज़ नहीं है। वह समाज जो अपनी महिलाओं के लिए बराबरी का दावा करता है, यदि अच्छी तरह से अवलोकन किया जाए तो हम पाएंगे कि महिलाओं ने दबाव झेल कर कठिनाइयों और संघर्षों को मद्देनज़र रखते हुए कुछ हासिल नहीं किया, जो उन्हें समाज में ख़ुद बराबर की हैसियत स्वीकार करवाने के लिए देनी पड़ती हैं। प्राचीन समाजों ने बेबुनियाद धारणाओं और रीति-रिवाजों के आधार पर महिलाओं को दबाया और यह मान लिया गया कि उन्हें ग़ुलामों की तरह ज़िंदगी गुज़ारने, हर तरह के ज़ुल्म सहने और सिर्फ़ मर्दों के आनंद के लिए बनाया गया है। उनके साथ केवल बाज़ार के सामान की तरह सुलूक किया गया, लेकिन आधुनिक समाज "बराबरी" के अपने नारों के ज़रिये महिलाओं को वही नुक़सान या उससे भी ज़्यादा नुक़सान पहुंचाते हैं।

साबित करने के लिए जद्दोजहद करती है कि वह आस-पास के मर्दों के 'बराबर' है। महिलाओं की अलग शारीरिक एवं मानसिक गुणों को उसकी कमज़ोरी समझा जाता है, इन कमज़ोरियों को एक सशक्त महिला के लिए उचित नहीं समझा जाता। रोना, रिश्तेदारों के लिए ज़्यादा चिन्ता, देख-भाल और प्रेम को प्रकट करने की भावनाओं को कम करके आंका जाता है।

कठिनाई यह है कि बराबरी के नारों ने महिलाओं को घरेलू काम-काज, बच्चों के लालन-पालन और शिक्षा में देरी करती हैं कि वे डरती हैं कि इससे उनके करियर पर असर पड़ेगा और उन्हें अपने काम की जगह में पुरुषों से पीछे रहना पड़ेगा। इसका कारण बराबरी के नारे हैं।

बहुत से लोगों का विचार है कि नारीत्व जैसी कोई चीज़ नहीं है। वह सब कुछ जो एक पुरुष कर सकता है महिला भी कर सकती है, लेकिन हक़ीक़त कुछ और है। बहुत से ऐसे कार्य हैं जो पुरुष और महिला दोनों कर सकते हैं और ऐसे भी हैं जो सिर्फ़ एक महिला कर सकती है या सिर्फ़ पुरुष कर सकते हैं। भी गर्भवती या शादीशुदा महिलाओं को प्रसव की छुट्टी आदि देने में होने वाले नुक़सान से बचने के लिए नौकरी पर नहीं रखा जाता। शिक्षण परिसरों के बुनियादी ढांचे में लड़कियों की विशेष ज़रूरतों को स्वीकार न करने के कारण लड़कियों को शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ज़्यादा नुक़सान उठाना पड़ता है।

वास्तविक स्थिति कुछ ऐसी है, जिसे एक सफल प्रोफ़ेसर ने अपने छात्रों से साझा किया, "अगर आप अपने करियर में कामयाब होना चाहते हैं, तो आपको अपनी निजी ज़िंदगी क़ुर्बान



साथ-साथ बड़े-बूढ़ों की देखभाल से आज़ाद नहीं किया, बल्कि परिवार के लिए कमा कर पुरुषों के बराबर साबित होने का अतिरिक्त बोझ भी डाल दिया।

पुरुषों के साथ चूहे-बिल्ली की दौड़ में महिला को अपनी तमाम ख़ुशियों को क़ुर्बान या सीमित करना पड़ता है। बच्चे को जन्म देना, दूध पिलाना और छोटे बच्चों की देखभाल किसी भी औरत के लिए सबसे बड़ी ख़ुशी होती है। इस काम को करते हुए बराबरी साबित करने के लिए उसे बड़ी क़ुर्बानी देनी पड़ती है। बहुत-सी युवतियां सिर्फ़ इसलिए शादी समाज महिलाओं पर अकेले घर के काम, बच्चों के लालन-पालन आदि का बोझ डालता रहा है, लेकिन ये साझा ज़िम्मेदारियां हैं जो दोनों कर सकते हैं और ख़ासतौर पर उस वक़्त जब दोनों काम कर रहे हों और कमा रहे हों।

इसकी प्रतिक्रिया के तौर पर महिलाधिकार संगठनों ने महिला की स्वाभाविक भूमिकाओं को अस्वीकार किया और उन्हें महत्व न देने का पक्ष लिया, जिसका नतीजा यह निकला कि सरकारें इन भूमिकाओं को आसान बनाने पर ज़्यादा ध्यान नहीं देतीं। अब करनी होगी। यदि आप अपनी निजी ज़िंदगी में कामयाब होना चाहते हैं तो आपको अपने करियर को क़ुर्बान करना होगा। अगर आप दोनों में कामयाब होना चाहते हैं तो आपको अपने आपको क़ुर्बान करना होगा। इसलिए, इस बराबरी का दिखावा छोड़कर हम दुनिया को महिलाओं के लिए और भी बेहतर बना सकते हैं। बराबरी की सही समझ यह है कि ''बराबरी'' के लिए महिला-पुरुष के बीच अन्तर को अस्वीकार करना ज़रूरी नहीं है। ■■

कर्नाटक में श्रम क़ानूनों में भारी बदलाव



एप्पल फोन बनाने वाली ताइवानी कंपनी फॉक्सकॉन द्वारा की गई लॉबिंग से कर्नाटक में भाजपा की राज्य सरकार द्वारा श्रम कानूनों में बड़े बदलाव किए गए हैं। इस संबंध में द फाइनेंशियल टाइम्स की एक रिपोर्ट में जानकारी दी गई है। कर्नाटक राज्य विधानसभा ने बीते 1 मार्च को एक श्रम क़ानून पारित किया, जो 12 घंटे की शिफ्ट में उत्पादन की अनुमति देता है और महिलाओं को भी रात में काम करने की अनुमति देता है।

अन्य परिवर्तनों के बीच इसने तीन दिन की छुट्टी लेने से पहले लगातार चार दिनों तक एक कर्मचारी के वैध काम के घंटों को नौ से बढ़ाकर 12 कर दिया है। स्वीकार्य ओवरटाइम घंटे तीन महीने की अवधि में 75 से बढ़ाकर 145 कर दिए गए हैं, लेकिन अधिकतम काम के घंटों की सीमा 48 घंटे प्रति सप्ताह तय की गई है। जहां नए क़ानूनों से अधिक अंतरराष्ट्रीय कंपनियों के कर्नाटक में विनिर्माण इकाई स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित होने की उम्मीद है, वहीं कोलार के विस्ट्रॉन इकाई में पिछले श्रमिक उपद्रव से पता चलता है कि श्रम क़ानूनों के नियमों का उल्लंघन कर्मचारियों को रोज़गार हड़ताल करने के लिए प्रेरित करता है। इन परिवर्तनों को करने से पहले किसी भी श्रमिक समूह या ट्रेड यूनियन से परामर्श किया गया था या नहीं, इसका कोई उल्लेख नहीं है।

भारत में पत्रकारों पर हमले बढ़े—रिपोर्ट



न्यूयॉर्क स्थित संगठन पोलीस प्रोजेक्ट ने पत्रकारों के खिलाफ भारत में हिंसा पर एक शोध किया है, जिसमें इन हमलों की मैपिंग की गई है। रिपोर्ट के अनुसार, भारत में पत्रकारों को फर्जी मामलों में गिरफ्तारी से लेकर हत्या तक कई तरह की हिंसा झेलनी पड़ी है जिस कारण भारत में पत्रकारिता एक खतरनाक पेशा बन गया है। पोलीस प्रोजेक्ट ने यह निष्कर्ण एक विस्तृत अध्ययन के बाद निकाला है। इस अध्ययन में पिछले मई 2019 से लेकर इस साल अगस्त तक की घटनाओं को शामिल किया गया है। मई 2019 से इस साल अगस्त के बीच भारत में पत्रकारों पर 256 हमले हुए। पोलीस प्रोजेक्ट ने अलग-अलग विषयों की कवरेज के दौरान हुई घटनाओं को जमा किया है। इसके मुताबिक जम्मू कश्मीर में 51, सीएए कानून के विरोध प्रदर्शनों के दौरान 26, दिल्ली दंगों के

दौरान 19 और कोविड मामलों की कवरेज के दौरान 46 घटनाएं हुईं। किसान आंदोलन के दौरान पत्रकारों के खिलाफ हिंसा की अब तक 10 घटनाएं हो चुकी हैं। बाकी 104 घटनाएं पूरे देश के दौरान अलग-अलग विषयों और समय से जुड़ी हैं।

पोलीस प्रोजेक्ट की सुचित्रा विजयन कहती हैं कि भारत में पत्रकारों को सरकार द्वारा ही अलग-अलग तरीक़ों से काम करने से रोका जा रहा है। विजयन कहती हैं, "सरकार भारत में पत्रकारों को धमकाकर, गिरफ्तारी या फ़र्ज़ी मामले दर्ज करके या किसी तरह की पाबंदियां लगाकर चुप करवा रही है। जो सरकार के ख़िलाफ़ बोलते हैं उन पर देशद्रोह जैसे मुकदमों और गिरफ़्तारी का ख़तरा लगातार बना रहता है।"

नोटबंदी के कारण हुई मौतों पर कोई आधिकारिक रिपोर्ट नहीं-केंद्र सरकार

केंद्र सरकार ने बीते दिनों राज्यसभा में बताया कि विमुद्रीकरण (नोटबंदी) के परिणामस्वरूप मरने वालों की संख्या के बारे में उसे कोई सरकारी रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई है। तृणमूल कांग्रेस के सदस्य अबीर रंजन बिश्वास ने सरकार से विमुद्रीकरण के परिणामस्वरूप मरने वालों की संख्या की जानकारी मांगी थी। उन्होंने सवाल इस संबंध में सरकार से ब्योरा मांगा था और साथ ही यह भी पूछा था कि यदि नहीं तो इसके क्या कारण हैं? बिश्वास ने सरकार से यह भी पूछा था कि क्या सरकार यह मानती है कि नोटबंदी का उसका निर्णय'' निर्दोष ''अनियोजित लोगों की मौत के लिए ज़िम्मेदार था?



वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी ने इन सवालों के लिखित जवाब में कहा, ''ऐसी कोई सरकारी रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई है। हालांकि, 18 दिसंबर 2018 को तत्कालीन वित्त मंत्री अरुण जेटली ने इसी उच्च सदन में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के सदस्य एलामाराम करीम द्वारा पूछे गए एक सवाल के जवाब में स्वीकार किया था कि नोटबंदी की अवधि के दौरान चार लोगों की मौत हुई थी। करीम ने सरकार से सवाल किया था कि विमुद्रीकरण के दौरान नोट बदलने के लिए लाइन में खड़े होने, मानसिक सदमे, काम के दबाव आदि के कारण बैंक कर्मियों सहित कितने व्यक्तियों की मौत हुई और क्या उनके परिवार को कोई मुआवजा दिया गया।

मुफ़्त बाइबल बांटने पर हंगामा

हिन्दुत्ववादी चरमपंथ की छाया से विश्व पुस्तक मेला, दिल्ली भी अछूता नहीं रहा है। सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक वीडियो के अनुसार, गत दिनों दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले में एक ईसाई संगठन 'द गिडियंस इंटरनेशनल' के स्टॉल पर चरमपंथियों ने हंगामा किया, जय श्री राम और हर-हर महादेव के नारे लगाए। हिन्दुत्ववादी चरमपंथियों का आरोप है कि इस स्टॉल पर मुफ़्त बाइबल बांटी जा रही थी। इसके विरोध में उन्होंने वहां उत्पात मचाया और माहौल ख़राब किया। उनका आरोप था कि यहां लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने की साज़िश हो रही थी।

कुछ ख़बरों में कहा गया कि चरमपंथियों ने वहां तोड़फोड़ भी की। इस हमले की वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद अनेक लोगों ने तीखी प्रतिक्रिया जतायी है। वहीं दूसरे पक्ष का कहना था कि दिल्ली पुलिस मामले को टाल कर चरमपंथियों का बचाव करती दिखी। पुलिस ने अपने बयान में कहा कि विरोध प्रदर्शन हुआ, लेकिन कोई किताब नहीं फाड़ी गयी और न ही किसी तरह की हिंसा देखी गई। इंडियन एक्सप्रेस की ख़बर के मुताबिक़ जब ईसाई समुदाय के स्वयंसेवकों ने विश्व पुस्तक मेले के आयोजकों से इस संबंध में शिकायत की, तो उन्हें बाइबल को मुफ़्त में नहीं बांटने को कहकर चुप्पी साध ली।

कहानी



राजेंद्र जोशी

दो गज़ ज़मीन

उन दिनों गांव में नया-नया नाजम कार्यालय खुला था। अब ज़मीन से जुड़ी समस्याएं गांव में ही निपटने लगी थीं। नाजम साहब भी लोगों के साथ ख़ूब घुल-मिल गए थे। नाजम दफ़्तर में कर्मचारी बहुत कम थे। शहर के लोग गांव के दफ़्तर में आना नहीं चाहते। दो-तीन लोगों को शहर से गांव के नए दफ़्तर में लगाया गया, पर नेताओं ने दबाव देकर उनकी बदली रद्द करवा दी। नाजम साहब को लगा कि ऐसे तो बिना कर्मचारियों के काम करना मुश्किल होगा। उन्होंने कलक्टर साहब से स्थानीय स्तर पर कर्मचारी रखने की मंज़ूरी ले ली। मगर पांच कोस तक कोई पढ़ा-लिखा आदमी नहीं मिल रहा था।



नाजम साहब को किसी ने बताया कि हीरेन थोड़ा-बहुत पढ़ा-लिखा है। गांव में किसी के घर कागद, चिढ़ी-पत्री आती है तो सभी उसी से पढ़वाते हैं। बस, वह थोड़ा बोलता अधिक है। नाजम साहब को भांपते देर नहीं लगी। कागद पढ़ने वाला आदमी काम कर सकता है। फिर करत-करत अभ्यास वाली बात है। हीरेन को बुलवा भेजा गया। हीरेन कभी-कभी दूसरे गांव भी चिढ़ी-पत्री पढ़ने जाया करता था। जब भी जाता तो अदब से तैयार होता, नए कपड़े पहनता, हजामत बनाता, फिर जाता था।

'चलो अच्छा हुआ नाजम साहब का बुलावा रात को ही आ गया। अब देखना भाग्यवान। हम ठीक समय पर नाजम साहब के पास पहुंचेंगे।' 'टीकली के बापू, नाजम साहब आपसे कागद क्यों पढ़वाएंगे? वो ख़ुद बैरिस्टरी पढ़े होंगे।' 'वह तो जाने से ही पता चलेगा।' 'बंदा हाजिर है नाजम साहब।' कहकर उसने दो-तीन शेरो-शायरी सुनाई। 'इतने महीनों में गांव में शायरी सुनाने वाला पहला आदमी देखा है हमने हीरेन। बैठो।' नाजम साहब बोले।

'नाजम साहब, हम कभी अपने पिताजी, दादाजी के सामने भी नहीं बैठे, तो आपके सामने कैसे बैठ सकते हैं? खड़े ही अच्छे लगते हैं।'

'कब तक खड़े रहोगे?' 'जब तक आपके सामने रहेंगे।' 'अच्छा सुनो, हमने तुम्हें इसलिए बुलाया है कि तुम पढ़े-लिखे हो।' 'हां नाजम साहब, हम आठ पढ़े हैं।' हीरेन चहकता बोला। 'कुछ पढ़ना हो तो बंदा अभी पढ़ेगा।' नाजम साहब के चेहरे पर ख़ुशी का भाव साफ़-साफ़ झलकने लगा। 'हीरेन, हमारे दफ़्तर में बाबू की जगह ख़ाली है। हम तुम्हें काम सिखा देंगे। सरकार की पक्की नौकरी है। रिटायर होने के बाद भी घर ख़र्च के लिए पेंशन मिलेगी। हम जानते हैं, तुम्हारे घर पर रोटी की कोई कमी नहीं है।' 'पर मुझे मेरे बाबा से पूछना पड़ेगा

साहब।' 'तुम फ़िक्र न करो। तुम्हारे बाबा अभी आते ही होंगे। मैंने उनको भी समाचार भेजा है।'

हीरेन को सरकारी नौकरी में मज़ा आने लगा था। घर की खेती के अलावा हर महीने अच्छी-खासी पगार आने लगी। सरकारी नौकरी में रहते हुए हीरेन ने बेटी का ब्याह कर दिया। दोनों बेटों को स्कूल में पढ़ाने लगा। ज़िंदगी की गाड़ी पटरी पर दौड़ रही थी। दूर तक गांवों में हीरेन की पैठ जम गई, उसे आदर भाव से देखा जाने लगा। इस बीच हीरेन की पदोन्नति हो गई। बीकानेर शहर में बदली हो गई। वह घर से रोज़ आने-जाने लगा।

शहर के दफ़्तर में अनेक ज़मींदार, किसान, वकील, दलाल आते रहते। अपने-अपने काम के मुताबिक़ हीरेन की सेवा करते। इस काम में हीरेन के साथ रफ़ीक़ अहमद भी था। वह भी प्रोन्नत होकर आया था। हीरेन और रफ़ीक़ भाई की दोस्ती परवान चढ़ने लगी। दोनों मिलकर सभी का काम करते और ऊपर की कमाई भी।

मगर हीरेन और रफ़ीक़ के बीच बरसों दांत काटी रोटी रहने के बाद अचानक अनबन हो गई। दोनों की राहें विपरीत हो गईं। एक समय था जब उनके बीच अच्छी दोस्ती थी। दोनों के घरों में एक जैसा सामान जाता। शहर में रहते हुए भी दोनों ने पास-पास ज़मीन ख़रीदी थी। दफ़्तर में दोनों की दोस्ती की दुहाई दी जाती थी। लेकिन अब दोनों के बीच क्या हुआ, कोई नहीं जानता था। हीरेन और रफ़ीक़ भी अपनी टूटी दोस्ती के बारे में किसी के आगे कुछ नहीं बोलते। फिर दोनों रिटायर हो गए। हीरेन के दोनों बेटे रमेश और मोहन पढ़-लिखकर नौकरी करने लगे। जिस दिन हीरेन रिटायर हुआ, उसी दिन दोनों ने गांव के स्कूल में अध्यापक की नौकरी शुरू की थी। शहर में नौकरी करते हुए हीरेन ने कभी शहर में मकान नहीं बनवाया। गांव में ही रहने लगा था।

शहर की लड़की से शादी होने के कारण रमेश ने अपनी बदली शहर में ही करवा ली। हीरेन के लाख मना करने के बाद भी रमेश और उसकी पत्नी गांव में रहने को राज़ी नहीं थे। मोहन और हीरेन गांव में रहते। मोहन स्कूल से आने के बाद पिता की सेवा और गायों को संभालता, खेत का काम भी देखता। हीरेन की इच्छा थी कि मोहन की शादी जल्दी हो जाए, अच्छी-सी बहू आ जाए तो घर संभाल लेगी। ज़िंदगी की गाड़ी अच्छे तरीक़े से चल रही थी। रमेश के समाचार आते रहते थे।

एक दिन सुबह-सुबह दोनों भाई जमीन पर कब्जा जमाने की नीयत से अपने-अपने ससुराल वालों के साथ पहुंच गए। दोनों भाई एक-दूसरे को भला-बुरा कहने लगे। मोहन भला था, पर उसकी पत्नी तेजतर्रार थी। बैठ गई जोर-जोर से चिल्लाती हुई- 'हमने पिताजी की सेवा की है, दो गज अतिरिक्त जमीन हमारी होगी।' नौबत हाथापाई तक आ गई।

एक दिन घर के बरामदे में मोहन ने पिताजी को चाय पकड़ाते हुए कहा- 'बाबूजी गांव में क्या पड़ा है? साधन-सुविधाएं तो कुछ भी नहीं हैं। मैं अपनी बदली बीकानेर करवा लूं, आप और हम शहर में रहेंगे।' 'बेटा, गांव में शुद्ध हवा है, ख़र्चा कम लगता है, हमारी प्रतिष्ठा है, बिरादरी के लोग भी सुख-दुख में साथ रहते हैं, जैसी सुविधा चाहिए गांव में भी कर सकते हैं। शहर में रहने के लिए घर भी नहीं है। पहले तो घर बनवाना पड़ेगा, फिर शहर की ज़िंदगी साथ नहीं निभाती बेटा, गांव में ज़िंदगी कोई ख़रीद नहीं सकता। आदमी के भाव नहीं लगते, अनमोल है। मोल-भाव की होती है शहरी ज़िंदगी बेटा।'

'आप ठीक कहते हैं बाबूजी।' फिर मोहन ने हिम्मत जुटाई, 'बाबूजी अब आपकी तबियत ठीक नहीं रहती। रमेश भइया भी यहां नहीं रहते। घर संभालने वाला कोई नहीं है। बाबूजी, मां मुझे हमेशा कहती थी कि वह बहुएं भी नौकरी वाली लाएगी।' फिर वह धीरे-धीरे बोला-'बाबूजी मेरे साथ की एक मैडम है, मेरी ही उम्र की है। उसके पिताजी हमारे ही महकमे में बड़े अफ़सर हैं। आप उनसे बात करो तो...।' थोड़े दिनों में दोनों परिवारों की सहमति से मोहन की भी शादी बड़े धूमधाम से शहरी मैडम से हो गई। अब हीरेन बहुत प्रसन्न था। शादी के कुछ दिनों बाद ही हीरेन के न चाहते हुए भी उसे मोहन के साथ शहर जाना पड़ा।

इस बीच हीरेन को लगा कि शहर की ज़मीन भी दोनों बेटों में बांट देनी

चाहिए। मौक़े की ज़मीन थी। उसने दोनों बेटों को बताया-'साथ वाली ज़मीन रफ़ीक़ अहमद की है। तीन सौ दो गज़ ज़मीन हमारी है और तीन सौ दो गज़ ज़मीन रफ़ीक़ की है।' थोड़े दिनों बाद हीरेन की मृत्यु हो गई। फिर रमेश और मोहन ने ज़मीन बांटने की क़वायद शुरू की। रमेश चाहता था कि उसे एक सौ बावन गज़ ज़मीन मिले और उधर मोहन की घरवाली चाहती थी कि पिताजी की सेवा हमने की है तो एक सौ बावन गज़ ज़मीन हमें मिलनी चाहिए।

एक दिन सुबह-सुबह दोनों भाई ज़मीन पर क़ब्ज़ा जमाने की नीयत से अपने-अपने ससुराल वालों के साथ पहुंच गए। दोनों भाई एक-दूसरे को भला-बुरा कहने लगे। मोहन भला था, पर उसकी पत्नी तेज़-तर्रार थी। बैठ गई ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाती हुई- 'हमने पिताजी की सेवा की है, दो गज़ अतिरिक्त ज़मीन हमारी होगी।' नौबत हाथापाई तक आ गई। लोग इकट्ठा होने लगे। पड़ोस में रफ़ीक़ भाई पेड़ों में पानी दे रहे थे। बाहर आए और बोले-'अरे भाई लोगो, इस कॉलोनी में और लोग भी रहते हैं। आपको शर्म नहीं आती बाप के मरते ही लड़ते हुए।'

पर वे नहीं माने। लड़ते-लड़ते शाम होने लगी। दोनों में से कोई दो गज़ ज़मीन कम लेने को तैयार नहीं था। रफ़ीक़ भाई ने दोनों को अपने पास बुलाया। चाय-पानी पिलाया। नाश्ता करवाया। वहां भी दोनों दो गज़ ज़मीन के लिए लड़ते रहे। बच्चों की लड़ाई देख उसे हीरेन की बहुत याद आई। रफ़ीक़ भाई ने शादी नहीं की थी। वे सोचने लगे कि इन बच्चों को मेरे और हीरेन के गहरे रिश्तों की जानकारी नहीं है। जब रमेश के बाद मोहन पैदा हुआ तो हीरेन से उन्होंने आग्रह किया था कि रमेश को वह गोद लेना चाहता है, लेकिन हीरेन ने साफ़ मना कर दिया था-'रफ़ीक़, अगर तुम हिंदू होते तो मैं फिर भी विचार कर सकता था, पर अपने बेटे को मुस्लिम बना दूं, यह बात मुझे क़तई मंज़ूर नहीं।'

"पर वे नहीं माने। लड़ते-लड़ते शाम होने लगी। दोनों में से कोई दो गज जमीन कम लेने को तैयार नहीं था। रफीक भाई ने दोनों को अपने पास बुलाया। चाय-पानी पिलाया। नाश्ता करवाया। वहां भी दोनों दो गज जमीन के लिए लड़ते रहे। बच्चों की लड़ाई देख उसे हीरेन की बहुत याद आई।"

उसके बाद से ही दोनों के रास्ते जुदा हो गए। रफ़ीक़ भाई को हीरेन की यह बात नागवार लगी। दोस्ती में जाति बड़ी नहीं होती और फिर मेरे पीछे कोई नहीं है। अब रफ़ीक़ जैसे हीरेन को सामने खड़ा देख रहे थे। मन ही मन बातें करते रहे, 'बोलता क्यों नहीं। मैं तेरे रहते जो नहीं कर सका, वह आज करूंगा। आज तुम यहीं खड़े रहना! अब एक की जगह मैं दोनों लड़कों को गोद लूंगा और तुम देखते रहना। मेरी क़ब्र को मिट्टी ये दोनों ही देने आएंगे।' सोचते-सोचते रफ़ीक़ भाई ज़ोर से चिल्लाए-'हीरेन भाई...।'

रमेश और मोहन ने रफ़ीक़ भाई को पकड़ लिया-'क्या हो गया आपको। आपकी तबियत ठीक नहीं है। चलो अस्पताल चलते हैं।' रफ़ीक़ भाई ख़ुद को संभालते हुए बोले-'मैं ठीक हूं। हीरेन मेरा भाई था।' रफ़ीक़ ने दोनों बेटों को शांत करते हुए हीरेन और ख़ुद के रिश्तों के विषय में विस्तार से बताया। रफ़ीक़ भाई के आंसुओं से ज़मीन भीग चुकी थी। रमेश और मोहन दोनों भाई भावुक हो उठे। अपने पिताजी की दोस्ती की बात सुनकर रमेश और मोहन रफ़ीक़ भाई के पैरों में नतमस्तक हो गए। दोनों ने एक साथ कहा-'अंकल जी, अब तो जो फ़ैसला आप कर दोगे, हमें मंज़ूर होगा।'

रफ़ीक़ भाई भीतर से हीरेन को याद करते हुए कहने लगे-'पहले अपनी बहुओं से भी पूछ लीजिए।' उन्होंने माथे पर पल्लू ढंकते हुए कहा-'आप हमारे ससुर समान नहीं, अब तो आप ही ससुरजी हैं, आपका हर फ़ैसला हमें स्वीकार होगा।' रफ़ीक़ भाई ने फ़ैसला सुनाया-'ये दोनों ज़मीनें बराबर-बराबर नाप की हैं, हमने साथ-साथ ली थी। तुमको दो गज़ ज़मीन अधिक चाहिए थी, मैं तुम दोनों को बराबर-बराबर ज़मीन देता हूं। झगड़ा ख़तम करो। तुम अब हीरेन के बेटे नहीं, मेरे बेटे हो। यह पकड़ो संपत्ति के बंटवारे के काग़ज़। ये दोनों प्लॉट तुम दोनों के होंगे। ■■



पाचन संबंधी समस्याओं से

बच्चों को बचाएं

सेहत

संपादन प्रभाग

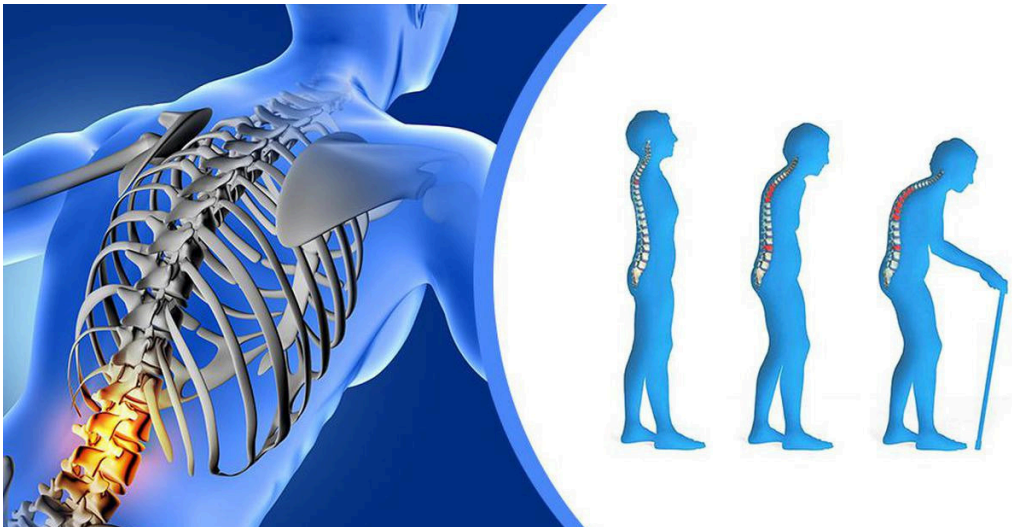
बच्चों की जीभ तो बाहर का खाना खाने के लिए सदा लपलपाती रहती है। आप उन्हें जब भी साथ लेकर बाज़ार जाएं, तो वे जो भी खाने-पीने की चीज़ें देखते हैं, मांगने लगते हैं। जिन चीज़ों का स्वाद उनकी जीभ पर बसा हुआ है, उसे खाने के लिए तो बाज़ार में सरेआम ज़िद पर ही अड़ जाते हैं। इस तरह कई माता-पिता उनकी ज़िद के आगे हार कर वह चीज़ उन्हें दिला देते हैं।

फिर जब भी उन्हें मौक़ा मिलता है, स्कूल से निकलते ही या बाज़ार में दोस्तों के साथ होने पर बाज़ार की चीज़ें खाने के लिए लपक पड़ती हैं। छिप-छिपाकर बाहर की चीज़ें खाना तो बच्चे जैसे अपनी बड़ी उपलब्धि मानते हैं। कई माता-पिता तो लाड-प्यार में भी बाहर की चीज़ें या डिब्बाबंद खाद्य उन्हें खाने को देते हैं। कई माता-पिता बाहर की चीज़ों का लालच देकर उनसे अपने गृहकार्य आदि पूरा करने की शर्त रखते देखे जाते हैं। मगर हक़ीक़त यह है कि इन सारी चीज़ों का बच्चों की सेहत पर बहुत बुरा असर पड़ता है। कम उम्र में ही उनका लिवर प्रभावित हो जाता है, कमज़ोर हो जाता है।

इस समय बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता काफ़ी कमज़ोर होती है। साथ ही बच्चे को दूषित खाने और पानी से कई तरह के रोग होने की संभावना अधिक रहती है। जब बच्चे बाहर का आहार

यानी जंक फूड खाते हैं तो इससे उनके पाचन तंत्र के साथ ही लिवर पर भी दबाव पड़ता है। अगर बच्चा लगातार बाहर का खाने की ज़िद करता है, तो आगे चलकर उसको लिवर संक्रमण और लिवर संबंधी अन्य रोग होने की संभावना काफ़ी बढ़ जाती है।

ऐसे में अभिभावकों को बच्चों की आदतों में सुधार लाने का प्रयास करना चाहिए और उनको घर का ही साफ़ बना खाना खाने की आदत डालनी चाहिए। बेशक आप उनकी मनपसंद चीज़ को घर पर ही बना सकते हैं। मगर उसे बाहर का खाना खाने से रोकें। लिवर संबंधी रोग होने पर बच्चों में कुछ लक्षण स्पष्ट दिखाई देते हैं। इन लक्षणों को आपको नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।



कारण

बच्चों में लिवर से संबंधित परेशानियां पैदा होने में कई तरह के अनुवांशिक कारक भी ज़िम्मेदार होते हैं। इनमें से एक अल्फा वन ऐन्टीट्रिप्सिन की कमी को कारण माना जाता है। लिवर में अल्फा वन ऐन्टीट्रिप्सिन नाम का प्रोटीन बनता है, जो रक्त प्रवाह में जाता है। जब यह तत्त्व बाधित हो जाता है, तो बच्चे को लिवर संबंधी परेशानियां पैदा होने की संभावना बढ़ जाती है। इसके अलावा भी लिवर संक्रमण के कई अन्य कारण होते हैं। इसके साथ ही हेपेटाइटिस ए, बी और सी, प्रतिरोधक प्रणाली का विकार और अनुवांशिक कारण लिवर रोग की वजह बनते हैं।

लक्षण

पीलिया होना : बच्चों में लिवर के कमज़ोर होने या उसमें संक्रमण होने पर पीलिया हो जाता है। लिवर में जब बिलिरूबिन नामक रसायन का स्तर प्रभावित होता है तो बच्चों में पीलिया जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। इस समस्या में बच्चे की त्वचा और आंखों का रंग पीला पड़ जाता है। भूख कम हो जाती है। बच्चा कुछ भी खाने से मना करने लगता है।

पेट में दर्द : लिवर संबंधी किसी भी तरह की समस्या में बच्चों को भोजन पचाने में समस्या होने लगती है। साथ ही उनके पेट में दर्द होता है। इसके अलावा बच्चे को पेट में गैस होने लगती है। यह दर्द लगातार बना रहता है। कभी-कभार दर्द हो, तब भी उसे नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए, क्योंकि भोजन पचाने में दिक़्क़त होने से ही पेट में दर्द होता है।

मल में पीलापन : बच्चे में लिवर का संक्रमण और लिवर में सूजन की वजह से बच्चे के मल का रंग पीला हो जाता है। अगर आपके बच्चे के मल का रंग पीला आ रहा है तो यह बिलीरुबिन के स्तर में बढ़ोत्तरी की मुख्य वजह हो सकता है। ऐसे में आपको तुरंत सतर्क हो जाना चाहिए और सबसे पहले बच्चे के भोजन पर ध्यान देना चाहिए। चिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए।

भूख न लगना : बच्चे के लिवर का संक्रमण या अन्य रोग होने पर उसे भूख कम लगती है। भूख कम होने के कारण बच्चे को पर्याप्त पोषण नहीं मिल पाता है। ऐसे में बच्चे का विकास भी बाधित होता है। साथ ही उसका वज़न तेज़ी से कम होने लगता है। वह हर समय सुस्त रहता है। इसे भी लिवर की समस्या का एक मुख्य लक्षण माना जाता है।

हड्डियों की कमज़ोरी : जिन बच्चों के लिवर में समस्या होती है, उनकी हड्डियों संबंधी समस्या भी होती है। लिवर की परेशानी होने पर बच्चों की हड्डियों का घनत्व कम होने लगता है, इस तरह उन्हें हड्डियों की समस्या होने लगती है और उनकी हड्डियों के टूटने की संभावना बढ़ जाती है। इन लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें और शुरू से ही बच्चों के खानपान का ख़्याल रखें। बाहर का भोजन देने से बचें, जितना हो सके, घर का बना भोजन ही खिलाएं। लिवर संक्रमण के लक्षण दिखने पर तुरंत चिकित्सक से संपर्क करें। ■■



प्रिंटिंग और पैकेजिंग : करियर का बेहतर विकल्प

करियर



संपादन प्रभाग

वर्तमान परिदृश्य में प्रिंटिंग एवं पैकेजिंग उद्योग की महत्ता अत्यधिक बढ़ी है। प्रिंटिंग एवं पैकेजिंग क्षेत्र एक तेज़ी से बढ़ता उद्योग है, जिसमें नवाचार और रोज़गार की अपार संभावनाएं हैं। प्रिंटिंग का नाम सुनते ही दिमाग़ में कई चीज़े आती हैं, जैसे फ़ोटो प्रिंटिंग, डॉक्यूमेंट प्रिंटिंग, कार्ड प्रिंटिंग आदि। आज के समय में प्रिंटिंग का कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है और इसे बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। लेकिन प्रिंटिंग का कार्य केवल काग़ज़ों पर टेक्सट और फ़ोटो प्रिंट करने तक ही नहीं है।

अगर आप कुछ अलग हटकर करना चाहते हैं तो आप प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में करियर बना सकते हैं। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में सभी कंपनियां अपने प्रोडक्ट को मार्केट तक या उसे प्रयोग करने वाले लोगों तक पहुंचाने के लिए प्रचार-प्रसार के लिए अच्छा पैसा ख़र्च करती हैं। इस कारण प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में करियर की संभावनाएं भी बढ़ीं हैं।

हाल ही में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक पैकेजिंग-प्रिंटिंग बाज़ार का आकार वर्ष 2020 में 352.01 अरब अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वर्ष 2025 तक 433.40 अरब अमेरिकी डॉलर होने का अनुमान है। इसके अलावा भारतीय मुद्रण उद्योग का विकास 12 फ़ीसद प्रतिवर्ष की दर है।

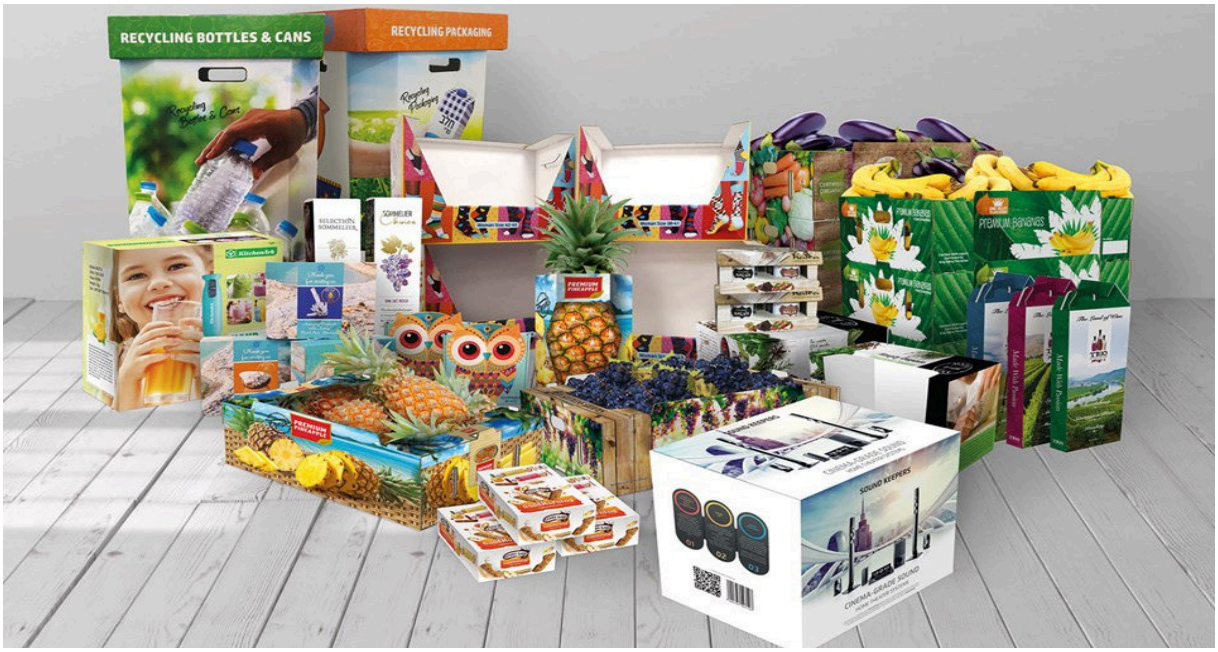
समय की मांग के अनुरूप व तेज़ी से बदलती हुई तकनीक के कारण इस क्षेत्र में विभिन्न स्तर पर कुशल कर्मचारियों की ज़रूरत पड़ती है, जो रोज़गार को बढ़ावा देता है।

प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग का महत्व

किसी भी उत्पाद के महत्व व गुणवत्ता को दर्शाने के लिए उच्च स्तर की प्रिंटिंग व पैकेजिंग की तकनीक का सहारा लिया जाता है। विभिन्न कंपनियां अपने उत्पादों की ब्रांडिंग, प्रिंटिंग व पैकेजिंग के सहारे ही करती हैं। क्या आप कभी किसी भी उत्पाद को डिब्बे पर कोई जानकारी के बिना ख़रीदना पसंद करेंगे? स्वाभाविक है नहीं। प्रिंटिंग एवं पैकेजिंग किसी भी उत्पाद की गुणवत्ता व उसके बारे में जानकारी संप्रोषित करने का एक प्रभावी तरीक़ा है। किसी भी उत्पाद की ब्रांडिंग, 'विजुअल मार्केटिंग' व विश्वसनीयता के लिए प्रिंटिंग व पैकेजिंग बहुत ही महत्वपूर्ण है। अन्य क्षेत्र जैसे प्रिंटेड इलेक्ट्रॉनिक, 3डी प्रिंटिंग, 'मोडिफाइड एटमासफोरेक पैकेजिंग' इस क्षेत्र में नवोचारोन्मुख क्षेत्रों में से है।

रोज़गार के अवसर

प्रिंटिंग एवं पैकेजिंग उद्योग देश के सबसे तेज़ी से बढ़ते उद्योगों में से एक है। इस क्षेत्र में करियर की अपार संभावनाएं हैं। यह क्षेत्र योग्य लोगों को अनेक अवसर प्रदान करता है। इस क्षेत्र में कोर्स करने के बाद आप विभिन्न महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, समाचार पत्रों, विज्ञापन एजेंसियों, सरकारी और निजी प्रकाशन गृहों में अच्छी नौकरी पा सकते हैं। देश में इस समय ढ़ाई लाख से अधिक प्रिंटिंग की कंपनियां हैं जो कि विश्व में सर्वाधिक है, इसके अनुपात में प्रिंटिंग एवं पैकेजिंग क्षेत्र में डिग्रीधारकों की संख्या बहुत कम है।



प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग में नौकरी

इस क्षेत्र में कोर्स करने के बाद आप विभिन्न निजी व बहुराष्ट्रीय कंपनियों में प्रिंटिंग सुपरवाइज़र, उत्पादन प्रबंधक, प्लांट प्रबंधक, गुणवत्ता प्रबंधक और प्रिंटिंग टेक्नोलॉजिस्ट के रूप में काम कर सकते हैं। इसके अलावा केंद्र व राज्य सरकारों के अधीन विभिन्न मंत्रालयों, सचिवालयों, प्रकाशन गृहों, गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया प्रेस व शिक्षण संस्थानों में काम करने का अवसर मिलता है। सरकारी सेवाओं में बैंक नोट प्रेस, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, एनसीईआरटी, एनआइएससीआइआर, सर्वे ऑफ़ इंडिया, एसपीएमसीआईएल, व प्रिंटिंग एवं स्टेशनरी निदेशालय में विभिन्न पदों पर काम करने का अवसर मिलता है।

उपलब्ध पाठ्यक्रम

प्रिंटिंग एवं पैकेजिंग तकनीकी के क्षेत्र में देश के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में एमटेक, बीटेक, बीई, बीवोक, बीएससी, डिप्लोमा व सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। इस क्षेत्र में शोध को बढ़ावा देने के लिए कुछ संस्थान पीएचडी प्रोग्राम भी संचालित कर रहे हैं।

प्रमुख शिक्षण संस्थान

–हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़
–जाधवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता
–गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय, हिसार
–अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई
–पीवीजीसीओइटी, पुणेढइतझएम आईटी, मनिपाल
–माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल
–भारतीय पैकेजिंग संस्थान, दिल्ली व विभिन्न रीज़नल इंस्टीट्यूट इन प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी इत्यादि शामिल हैं। ■■

व्यक्तिगत व्यवहार की पद्धति

“वह किताब यही है, जिसमें कोई संदेह नहीं, मार्गदर्शन है डर रखने वालों के लिए।”
(क़ुरआन, 2:2)



आख़िरी पन्ना



डॉ. फ़रहत हुसैन

धरती पर मनुष्य ही वह प्राणी है जिसे विचार तथा धर्म की स्वतंत्रता प्राप्त है, इसलिए उसे इस संसार में जीवन-यापन हेतु एक जीवन-प्रणाली की आवश्यकता है। मनुष्य नदी नहीं है जिसका मार्ग पृथ्वी की ऊंचाई से स्वयं निश्चित हो जाता है। मनुष्य निरा पशु-पक्षी भी नहीं है कि पथ-प्रदर्शन के लिए प्रकृति ही पर्याप्त हो। अपने जीवन के एक बड़े भाग में प्राकृतिक नियमों का दास होते हुए भी मनुष्य जीवन के ऐसे अनेक पहलू रखता है जहां कोई लगा-बंधा मार्ग नहीं मिलता, बल्कि उसे अपनी इच्छा से मार्ग का चयन करना पड़ता है। उसे विचार का एक मार्ग चाहिए, जिससे वह अपनी और सृष्टि की समस्याओं का समाधान कर सके। उसको व्यक्तिगत व्यवहार की पद्धति चाहिए, जिसका अनुसरण करके वह सभ्य और शालीन जीवन जी सके।

उसको घरेलू जीवन, पारिवारिक रिश्तों, आजीविका संबंधी क्रिया-कलापों, सामाजिक व्यवस्था हेतु मार्ग चाहिए जिस पर वह एक व्यक्ति की हैसियत से ही नहीं, एक समाज, एक राष्ट्र और एक जाति के रूप में अग्रसर हो सके। संसार में अपने जीवन-उद्देश्य और जीवन के अपने परम लक्ष्य का ज्ञान प्राप्त कर सके।

यह बड़ी तर्कसंगत एवं विवेकपूर्ण बात है कि किसी चीज़ का निर्माता ही उसकी कार्यविधि तय करता है। छोटी से छोटी मशीन के साथ भी उसका ‘मैनुअल’ दिया जाता है। इंसान तो धरती पर ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। उसका रचयिता ही उसके लिए ‘मैनुअल’ या जीवन व्यतीत करने की प्रणाली बताने तथा उसके जीवन के उद्देश्य तथा परम लक्ष्य को इंगित करने का अधिकारी है। इसके लिए स्वयं अपने विवेक पर अथवा अपने जैसे दूसरे लोगों पर भरोसा

“यह लोगों के लिए सूझ के प्रकाशों का पूंज है, और मार्गदर्शन और दयालुता हैं उन लोगों के लिए जो विश्वास करें।” (क़ुरआन, 45:20)



यह बड़ी तर्कसंगत एवं विवेकपूर्ण बात है कि किसी चीज़ का निर्माता ही उसकी कार्यविधि तय करता है। छोटी से छोटी मशीन के साथ भी उसका 'मैनुअल' दिया जाता है। इंसान तो धरती पर ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। उसका रचयिता ही उसके लिए 'मैनुअल'या जीवन व्यतीत करने की प्रणाली बताने तथा उसके जीवन के उद्देश्य तथा परम लक्ष्य को इंगित करने का अधिकारी है। इसके लिए स्वयं अपने विवेक पर अथवा अपने जैसे दूसरे लोगों पर भरोसा करना नादानी होगी।

करना नादानी होगी।

इंसान और इस विशालकाय सृष्टि के रचयिता ईश्वर ने धरती पर मनुष्य की समस्त भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति की पूर्ण एवं संतुलित व्यवस्था की है। खाने-पीने, रहने-बसने आदि के समस्त साधन उपलब्ध कराए। उसकी आध्यात्मिक आवश्यकता, जीवन उद्देश्य एवं जीवन-यापन के ढंग बताने के लिए अपने दूतों को पूर्ण ज्ञान देकर भेजा। यह दूत अपने-अपने देशों में अपनी कार्य अवधि और कार्य क्षेत्र में इंसानों का मार्गदर्शन करते रहे। जब संसार ने प्रगति के वैश्विक दौर में प्रवेश किया तो ईश्वर ने अपने अंतिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) को अंतिम ईशग्रंथ पवित्र क़ुरआन के साथ संपूर्ण मानवजाति के मार्गदर्शन हेतु नियुक्त किया। हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) समस्त ईशदूतों के प्रतिनिधि हैं और क़ुरआन सभी ईश्वरीय आदेशों और ग्रंथों का प्रतिनिधि एवं सार है। हमारा विश्वास है कि यही जीवन प्रणाली अर्थात् 'इस्लाम' ईश्वर प्रदत्त है और मनुष्य की सभी जटिल समस्याओं का त्रुटिरहित शाश्वत समाधान है। इस जीवन प्रणाली को अपनाकर व्यक्ति मानसिक शांति और पारलौकिक सफलता दोनों को प्राप्त कर सकता है। यही वह ज्योति है जिसके प्रकाश में मनुष्य सत्य मार्ग का अनुसरण करता है और जिसके अभाव में अंधेरे में भटकता रहेगा और केवल परेशानी से दो-चार रहेगा।

इस संसार में जितने भी धर्म हैं वे या तो किसी व्यक्ति विशेष के नाम पर हैं या उस जाति के नाम पर जिसमें उस धर्म का उदय हुआ हो, परंतु इस्लाम किसी व्यक्ति या जाति से संबद्ध नहीं है। इसका नाम एक विशेष गुण को प्रकट करता है जो शब्द 'इस्लाम' के अर्थ में निहित है, जिससे स्पष्ट है कि यह किसी व्यक्ति के दिमाग़ की उपज नहीं है और न किसी जाति विशेष तक सीमित है।

'इस्लाम' अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है सलामती, अमन, शांति, आज्ञापालन और समर्पण। इस्लाम में जीवन पद्धति है, जिसमें इंसान अपने प्रभु और पालनहार के प्रति पूर्ण समर्पित होकर उसकी आज्ञा का पालन करता है, उसके आदेशों के अनुसार जीवन व्यतीत करता है। ऐसे ही जीवन से मनुष्य दुनिया में अमन-शांति और चैन से रहता है और परलोक में परम सुख प्राप्त करता है। ■■

"तुममें जो बड़ाई वाले और सामर्थ्यवान हैं, वे नातेदारों, मुहताजों और अल्लाह की राह में घरबार छोड़ने वालों को देने से बाज़ रहने की क़सम न खा बैठें। उन्हें चाहिए कि क्षमा कर दें और उनसे दरगुज़र करें। क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा करे? अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यंत दयावान है।"

(कुरआन, 24:22)

with best compliment from

Mansoor AhmadKhan [Hyderabad]

KANTI Monthly, New Delhi
APRIL 2023
Posted on 20-21 March 2023
Published on 18 March 2023
Posted Delhi RMS Delhi-110006

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2021-2023
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U(SE)-73/2021-2023
Total Pages with Cover: 52

अल्लाह के रसूल ने इरशाद फ़रमाया :

मैं अच्छे अख़्लाक़ को

मुकम्मल करने के लिए भेजा गया हूं।

(इमाम मालिक : 705)

With Best Compliment from

sagar

SAGAR FEEDS & FOODS PROCESSING INDUSTRIES

Plot No. L-21, Gidc Concolim Industrial Estate
Concolim-403703 GOA
Email: sagarffpi@gmail.com